

## तीर्थ रटनु

२

कृपा सिन्धु करतार जो, हाणे तीरथु रटनु चवां ।  
 लाहूती लालन जी, लिवं सां लाति लवां ॥  
 नेम शारण्य तीर्थ ते, आयो सबाझलु साई ।  
 पंडो कयाऊं प्रीति सां, लखपति गोसाई ॥  
 सुन्दर सरोवर उति दिठा, बी अंबनि वणिकार ।  
 शोनक कथा मंडप जो, दिलिबर कयो दीदारु ॥  
 उते बड़ जे छांव में, वेठुमि बाबलु वीरु ।  
 सूर्ज जियां सतिसंग में, साई सन्तु सुधीरु ॥  
 हुकिड़ो छिकीनि हर्ष सां, मिठिड़ा बालीनि बोल ।  
 साई ढकण ढोल, तवहां जी साहिबु सभु सवली करे ॥

३

दासनि पुछियो दिलिबर हिते, कहिड़ी लीला प्रभूअ कई ।  
 साईअ बुधार्ई सनेह सां, कथा करुण मई ॥  
 रघुकुल कमल दिवाकर, हितिड़े यज्ञ कयो ।  
 घोड़े सां दिगिविजय लाइ, शत्रुहनु लालु वयो ॥  
 यज्ञ मंडप में ऋषी मुनी, वेद मन्त्र उचारीनि ।  
 जिनि जा मधुर बालिड़ा, टेई लोक तारीनि ॥  
 हवन जूं आहूतियूं, विज्ञनि घणे उत्साह ।  
 कंगणु ब्रधी कौशल धणी, वेठुमि शाहनि शाह ॥

स्वर्ण मूरति स्वामिनि जी, सिंघासण बिराजे ।  
 युगल जे जैकार सां, मगनु पियो गाजे ॥  
 हिक द्रींहु राज दरबारि में, राजत श्री रघुवीर ।  
 दीक्षित यज्ञ दीक्षा सां, पहिरे वलकल चीर ॥  
 मुख्य लोगनि घणे मोद सां, बोलिड़ा बुधायी ।  
 देव कुमारनि खां सरिसु, ब्र ऋषिकुमार आया ॥  
 गार्हनि कथा रस भरी, करे वीणा झनिकार ।  
 वाणीअ में मेठाजिड़ो, अथनि अपर अपारु ॥  
 नई काव्य रचना बुधी, मोहिया सभु नर नारि ।  
 अहिड़ा बहुगुण बालिका, कीअ सिरिज्या सिरजणहार ॥  
 सुडोल सुशील सुहावणा, गौर श्याम सुकुमार ।  
 शुक्र जियां सुहिणी नासिका, वारिड़ा घुंडीदार ॥  
 केस लटिकनि कुल्हड़नि ते, ब्री सुहिणी रखियल सितार ।  
 ब्रह्मचारी थनि वेसिड़ो, मनोहर मनठार ॥  
 हथ जोड़े कयूं वेनती, सब्बाझी सरिकारि ।  
 सिधो घुराए बालकनि, करियो दिव्य दीदारु ॥  
 बुधो संगीतु उन्हनि जो, अयोध्या जो आधार ।  
 अवशि अवहां जे मन खे, आनन्दु थिए अपारु ॥  
 बुधण सां रघुवीर जे, हींअड़े थियो आनन्दु ।  
 पिता जियां प्रसन्न थिया, दिसूं बचनि मुखु चंदु ॥  
 लोकोत्तर पुरुषनि जी, आहे अद्भुत कहाणी ।  
 जेहिं खे ना ज्ञाणी सधे, वेदनि जी वाणी ॥

हिक सभासद ब्रह्मण खे, आज्ञा दिनाऊं ।  
 वठी आउ आदुर सां, थी गदि गदि चयाऊं ॥  
 सद्विड़ो बुधी साहिब जो, ब्रई बालक निमाणा ।  
 आयमि राज दरिबारि में, सोढ़ल सियाणा ॥  
 परियां दिसी बचिड़नि खे, राघव नेण ठरिया ।  
 विरह ऐं वसुल जा, आवांधा वरिया ॥  
 अनूपम लहरि अनुराग जी, रघुवर दिलि जागी ।  
 साह सुजाती सिक सां, सूरत सां सागी ॥  
 जनक ललीअ गुण गलीअ में, मगनु श्री रघुवीरु ।  
 वेठो संभाले पाण खे, धर्मधुरंधरु धीरु ॥  
 कंहि कारण बालकनि में, जागियो नूतनु नीहु ।  
 रग रग में वरिषण लगो, मिठिड़ो मुहिबत मीहु ॥  
 बिनहीं बालिकनि अदब सां, बोली जै महाराज ।  
 अविचलु रहेव राजिड़ो, सूर्यकुल सिरताज ॥  
 यथा योग्य आसणनि ते, विराजमानु थिया वीर ।  
 विनय ऐं भक्तीअ सां, बालिया वचन गम्भीर ॥  
 महाराज रघुवंशमणि, कहिड़ी आज्ञा फरिमायो ।  
 सभासदु साहिब जो, असां वठी आयो ॥  
 रोके वेगु रिह जो, थधो साहु खणी ।  
 रुधकण्ठ गद् गद् गिरा, बोलियो अवध धणी ॥  
 बाल बुधो लोकनि खां, तवहाँ कयो सुठो संगीतु ।  
 मां बि बुधणु चाहियां उहो, प्यारो काव्यु पुनीतु ॥

जे दिलिड़ी हुजेव दादुला, त मिठो गीतु गायो ।  
 तवहां जो रूपु रसीलड़ो, मुंहिजे मन भायो ॥  
 बालकनि चयो विनय सा, सिरिड़ो निवाए ।  
 असां जे काव्य संगीत जो, वदो प्रसंगु आहे ॥  
 जंहि में श्री महाराज जो, आहे गुणनि विस्तारु ।  
 किथा चऊं आज्ञा करियो, रघुकुल जा सरदार ॥  
 अम्बृत जहिड़ो बोलिड़ा, बालकनि बोलिया ।  
 रघुवर जे दिलि दर्द जा, दरिवाजा खोलिया ॥  
 वदी विरह जी वीरि खे, सूरिहियु संभारे ।  
 चयो मिठी पाबोह सां, पुटिड़नि पुचिकारे ॥  
 लाल लाखीणा लादुला, बचिड़ा बहु गुण ब्रार ।  
 पुई पायावं प्यार सां, करे हींअड़े हार ॥  
 छातीअ लाए छोह सां, थींदुसि ठण्डे ठार ।  
 कहिड़े पुण्यवन्त पिता जी, गोदि कयव गुलिजार ॥  
 कंहि सिंधियव सनेह सां, मस्तक गभेअड़ा वार ।  
 मोतियुनि जहिड़ा द्रंदिड़ा, दिसी माणियो सुखु अपारु ॥  
 इऐं उचारे दिलि में, पोइ बाहिरि बोलियाऊं बोलु ।  
 अजु बुधायो मौज सां, को प्रसंगु रसु अमोलु ॥  
 सुभाणे प्रभाति खां, कथा आरम्भु कजो ।  
 धीरे धीरे प्रसंगु सभु, चोरे चंगु चइजो ॥  
 बुधी आज्ञा प्रभूअ जी, कयो गुणनि जो गानु ।  
 जिनि जी मिठिड़ीअ तान ते, थी सभा सजी मस्तानु ॥

वाह जो कथा रसीलिड़ी, वाह जो बचिड़नि बोलु ।  
 वाह कवी तुंहिजी रचिना, जग में आ अनमोलु ॥  
 वाह वाह जे आवाज सां, गूंजण लगो गगनु ।  
 रीझी रस सागर में, थियो अयोध्या मीरु मगनु ॥  
 जानिब जिज्ञासा कई, बुधायो बहुगुण बार ।  
 हिन कविता जो केरु आ, रांझन रचणहारु ॥  
 कंहि सेखारियुव लादिला, हहिड़ो मधुर संगीतु ।  
 कंहिजे कृपा प्रसाद सां, पातुव प्रेम पुनीतु ॥  
 महर्षि श्री वाल्मीक जी, हीअ रचिना रस भरी ।  
 उन्हनि कृपा प्रसाद सां, असां कंठि धरी ॥  
 रघुवर चयो मिठिड़ी कथा, दिलि खे घणो वणी ।  
 कविता महर्षिदेव जी, सभ कविता मुकट मणी ॥  
 पूरियूं पकोड़ा प्यार सां, आयो लखणु लालु खणी ।  
 खाराए बचिड़नि खे, मिठिड़ो अवध धणी ॥  
 विदा करे बालकनि खे, आयो शान्ति भवन श्रीरामु ।  
 अखियुनि में छांड़जी वयो, बचिड़नि रूपु ललामु ॥  
 मन ई मन सोचण लगा, छो दिलिड़ी थी मांदी ।  
 हर हर हिननि बचनि लाइ, थिए हुबिड़ी हेकांदी ॥  
 हिननि बचिड़नि खे द्रिसी, थियो वात्सल्य रस संचारु ।  
 पीरीअ में पिता खे, जीअँ पुटिड़नि लइ प्यारु ॥  
 दिलि डुकी उन्हनि दे, भाकिड़ी पेई पाए ।  
 बचिड़नि बोल बुधण लाइ, थो कनिड़ो लीलाए ॥

हा विधिना मुंहिजा किये, अहिड़ा निर्मल भाग ।  
 राति दीहा आ हिय बरी, विरह व्यथा जी आगि ॥  
 हिननि ब्रचनि जे दरस सां, दिलिड़ी पियमि ठरी ।  
 सदा रहेंमि अडण में, हीअ जोड़ी रस भरी ॥  
 प्रिया रूप जी मधुरता, तिनि अगडनि में झलिके ।  
 रघुकुल कुमारनि जियां, गम्भीरता छलिके ॥  
 दिलि चवे ही राजकुंवर, नाहिनि ऋषिकुमार ।  
 सदा जीए श्रीजू प्रिया, ही आहिनि मुंहिजा बार ॥  
 बिए कंहि राजा ब्रारिड़ा, छो बनिड़ो वसाईनि ।  
 मां कठोर चित राम जा, बालक ही आहिनि ॥  
 महर्षि जे आश्रम खां, बाल आहिनि आया ।  
 रहे प्रिया उन विपिन में, इऐं सोचे रघुराया ॥  
 हा प्रिया ! विपिन संगिनी !, श्री वैदेही प्यारी ।  
 साधुशीला सरल हृदया, मिथिलेश कुमारी ॥  
 पति प्राणा प्रिय पार्थिवी, निमिनंदिनि निमाणी ।  
 सिधो वरीमिं वतन दे, मुंहिजे दिलि जी धयाणी ॥  
 भोर सुभाव भूनंदिनी ! मुग्धा महाराणी ।  
 अजरु अमरु सौभागिड़ो, मैथिलि शल माणी ॥  
 श्री सियदेवी सद्रिड़ा करे, मुंहिजी काया कुमिलाणी ।  
 श्री जानिकि चंद्र जानिब मिठा, शल जुड़ियइ जुवाणी ॥  
 तो बिनु राजिड़ो राम लाइ, ऊंदहि अंधकारो ।  
 वसे नीरु नेणनि मां, आइहड्डु सियारो ॥

कद्रहिं मिलंदो कुरिब मां, पार्थिविचन्दु प्यारो ।  
 श्री रंगदेव कृपा सां, थिए अङ्गु उजियारो ॥  
 बालक दिसी दिलि थी चवे, सज्गु घरि ईदो ।  
 मिलंदुसि मैथिलि चन्द्र सां, सो सोना सिजु थीदो ॥  
 वाधायूं सारो गामिड़ो, श्री वैद्यलि खे दीदो ।  
 श्री मैथिलि मेलीदो, कलुगीधरु कृपा करे ॥

•गीतु •

अजु का जो आई विपिन द्राहं वाधाई ।  
 विछायां गुलनि जी सेजड़ी सुहाई ॥  
 गुलाब जे गुलनि जी सुगन्धि सिंचाई ।  
 सत्य वेदवती पत्रिका पठाई ॥  
 अचो सखी सहेली मंगल मनाई ।  
 सुहागिणि थी कोकिल श्री खणिङ सदाई ॥  
 ( श्री साई साहिबु )

४

आयुमि अयोध्या धाम में, अबलु आनन्द कन्दु ।  
 प्रमोद बन निकुंज में, देरो कयो दिलिबन्द ॥  
 थलिहे जे सन्तनि सां, थियो मधुरु मेलो ।  
 सति पुरुषनि जे मिलण सां, वधे विंदुर वेलो ॥

घर घर में राम जनम जो, आनन्दु हुआ छायो ।  
 निज़ारो रामनगर जो, बाबल मन भांयो ॥  
 साकेत पुरी अ साई दिनो, सुखिड़ो सवायो ।  
 मंदिर में वाधायुनि आ, वाह जो धजु लायो ॥  
 नौमीअ दीहु ब्रतिड़ो रखी, कयो सरयूअ इश्नानु ।  
 अबलु आयुमि अनुराग सां, श्रीराम जन्म स्थान ॥  
 उते श्री कौशल्या कछ में, दिठो नओं ज़ावलु रघुवीरु ।  
 जिते लगे साकेत जी, ठंडिड़ी सुगन्धि समीर ॥  
 पुलक शरीर गद् गद् गिरा, बाबलु बोले बोल ।  
 वाधायूं राम जननि खे, दिनियूं ढकण ढोल ॥  
 जीरे जो प्रसादिड़ो, पूजारीअ दिनो ।  
 चरणामृत करे पानिड़ो, बाबलु भाव भिनो ॥  
 रांदीका रघुवीर खे, साई दिना सवें ।  
 देई किलकारियूं कुरिब मां, लालनु लाति लवें ॥  
 आशीशूं देई अडण में, अबल चन्द्रु आयो ।  
 भोजन जो सायो, भगतनि कयो भाव सां ॥

५

राति जो सतिसंग में, वेठा हुआमि वीर ।  
 राम जननि जी रस कथा, बुधार्ई मालिक मीर ॥  
 खीरु खाई बचिड़ो ज़णियो, श्री कौशल्या राणी ।  
 दरिबारि में दशरथ जे, पेई कनि वाणी ॥  
 उआं उआं जी धुनिड़ी, ज़णु बादलु थो गरिजे ।



दशरथ जे रोम रोम में, ब्रह्मानन्दु सिरिजे ॥  
 उत्कन्ठा वठी हथिड़ो, राजा महलनि में आंदो ।  
 ब्रचिड़े जो मुखिड़ो पसी, थियो हर्षिड़ो हेकांदो ॥  
 प्रेमानन्द मगनु थियो, श्री दशरथु राजा ।  
 हुकुमु दिनाई हुब सां, सभु वजायो बाजा ॥  
 खोलु सभु खजाना, लिव सां लुटाया ।  
 याचकु रहियो न जग में, जदहिं जायो रघुराया ॥  
 दशरथ लुटाया दिलि सां, माणिक ऐं मोती ।  
 बाकी बचायाऊं घर में, साड़ी ऐं धोती ॥  
 दानु दिसी हाथियुनि जो, भवानीअ भउ थियो ।  
 गणेशु लिकाए गोदि में, चयाई लाल न पाइ लियो ॥  
 श्री रघुवर प्रताप सां, रिधि सिधि कयो निवासु ।  
 अगे खां अगिरो थियो, अज नन्दन आवासु ॥  
 आज जे सुभग सेज ते, राजे राघव महितारी ।  
 उछंग में अलिबेलिड़ो, शोभे साकेत विहारी ॥  
 पुरुषु प्रसिद्धि प्रकाश निधि, प्रघटु परावरु नाथु ।  
 सो कौशल्या गोदि में, जंहि शंकरु नाए माथु ॥  
 वरी वरी मुखचन्दु दिसी, करे नेणनि चकोरी ।  
 रूप सुधा जो पानु करे, भाव मगनु भोरी ॥  
 जंहि सुख लाइ लालिची लट्ठ, शिव सनकादि उदासी ।  
 उन सुख सिन्धु मगनु मैया, पर पलि पलि प्रेम प्यासी ॥  
 अद्भुतु रंगति प्रेम जी, पूरणु कीन थिए ।

प्यास मिटे पाणीअ सां, सो पाणी उत्र थिए ॥  
 मायड़ी घणे मोद सां, लादिड़ा लदाए ।  
 छातीअ लाए छोह मां, बुबिड़ी धाराए ॥  
 अपार वात्सल्य रस जी, वसे अमिय धारा ।  
 भिज़ी पवनि भूरल जा, नीलमु अंग सारा ॥  
 लाल लाल चपड़नि ते, खीरड़े जूं बूंदूं ।  
 साईअ चयो सेवकनि खे, कहिड़ियूं अजाइबु हूंदियूं ॥  
 कदहिं चुमीं चपिड़नि खे, गीतिड़ा पेई गाए ।  
 नूतन नूतन नीह सां, रघुवरु रीझाए ॥  
 देविता बादल ओट खां, कौतकु निहारीनि ।  
 गुलड़नि जी वर्षा करे, जै जै उचारीनि ॥  
 जै जै राघव जननि जी, जै रघुवर महितारी ।  
 जै पट महिषी दशरथ जी, अंदर उजियारी ॥  
 दशरथ घरनि धन्यु तूं, धनु धनु तो अनुरागु ।  
 मिलियुइ बालक रूप में, साकेत जो सौभागु ॥  
 श्री रंगनाथ प्रसाद सां, सदां सुख माणीं ।  
 जगत पूज्य रघुवीर जी, तूं मायड़ी महाराणी ॥  
 ओढ़ी महल आकाश खां, थी अम्बृत बरिसाति ।  
 भिज़ी पेई भूरल जी, जै जै करे जमाति ॥  
 सेवकनि पुछियो सनेह सां, ही जलु किथां आयो ।  
 साईअ चयो सरियुअ जलु, आहे देवनि वरिसायो ॥  
 बुधनि जिते रामलाल जी, कीरति कुरिब भरी ।

उते अम्बृत वर्षा कनि, हर्ष सां हर घड़ी ॥  
 श्री राम कथा जे रस जो, इहो अविचलु प्रतापु ।  
 कोटि जन्म जो पातकी, थिए पलक में निष्पापु ॥  
 राम कथा जे बुधण लाइ, देवनि मंडलु अचे ।  
 मगनु थिये मुहिबत में, तिनि नहुँ नहुँ नेणु नचे ॥  
 गुर परमेश्वर कृपा सां थो, मन में मोदु मचे ।  
 जो राघव रंगि रचे, सो माणें मौजूं इहे ॥

६

सन्तु श्री राम वल्लभशरणि, हर हंथि नामियारो ।  
 अयोध्या जे सन्तनि में, हो नेही नामियारो ॥  
 साख बुधी सन्तनि जी, थियो साईं अ उत्साहु ।  
 संतनि लाइ सिकंदो वते, तोड़े प्रेम पतिशाहु ॥  
 आया घणे अनुराग सां, बादामियूं भेट खणी ।  
 वंदनु कयो सन्तनि खे, दासनि दिलि धणी ॥  
 अमड़ि बि घणे अनुराग सां, कयो चरण वंदनु ।  
 सन्तनि चयो मिठिड़ो लगैव, सदा रघुनंदनु ॥  
 उन्हीअ महल दासनि खे, दिनो चरणामृतु सन्तनि ।  
 तंहि अम्बृत जी प्यासिड़ी, थी साईं अमड़ि मनि ॥  
 सन्तनि पुछियो सेठि जी, कहिड़ी अथव अभिलाष ।  
 हथ जोड़े हाकिम चयो, चरणांमृत जी प्यास ॥  
 बई चरण साईंअ गोदि में, सन्तनि तदहिं दिनां ।  
 पोइ त प्रेम जे रंग में, साईं अमड़ि भिनां ॥

पद कमल धोई प्यालिड़ा, भरे भरे त पीअनि ।  
 हिक हिक अम्बृत बूंद सां, किरोड़ें जुग जियनि ॥  
 अजरु अमरु अनुरागिड़ो, अजरु अमरु आनन्दु ।  
 अजरु अमरु सतिसंगिड़ो, अजरु अमरु सुखकन्दु ॥  
 पोइ कयो वचन विलासिड़ो, सन्तनि ऐं साई ।  
 भरियो रहे भावनि सां, भूरलु सदाई ॥  
 ज्ञानवन्त ऐं भगत जो, रस भेदिड़ो बुधायो ।  
 कहिड़ो सुलभु बिन्हीं में, सो खोले समुझायो ॥  
 सन्तनि चयो गीता चवे, सुलभु भगिती योगु ।  
 भगतनि सां साहिब जी, कृपा जो संजोगु ॥  
 ज्ञानी भव सागर खां, तरी पारि थिए ।  
 भगत खे कृपा जहाज में, प्रभू खणी गोदि विहे ॥  
 ज्ञान जो मार्ग शान्ति मइ, प्रकाशमयी मैदानु ।  
 भक्ति जो रस्तो रस भरियो, गहिरो गुलिस्तानु ॥  
 मिस्त्रीअ सां पीसजी वजे, सा किवली ज्ञानी ।  
 माणे रसु मिस्त्रीअ जो, सो भगतु रस खानी ॥  
 ज्ञानी रहे एकान्ति में, भगतु वसाए वेड़हो ।  
 ज्ञानियुनि लाइ अगमु जो, सो नेहियुनि लाइ नेड़ो ॥  
 पाण प्रभू श्रीमुख सां, इहे ब्रालिड़ा बुधाए ।  
 नेही नंदिड़ो बचिड़ो, ज्ञानी वदो पुटु आहे ॥  
 ज्ञानियुनि जी मूखे ओनिड़ी, असुलु आहे कान ।  
 पुठियां घुमां प्रेमियुनि जे, बुधां गुणनि जो गानु ॥

ब्रह्मा शंकरु लक्ष्मी, पंहिजो आतम रूपु ।  
 भक्त समानु न मिठा लगनि, कयड़ो कथनु अनूपु ॥  
 जिनि खे मुहिजे भगति जी, मन में लागि लगी ।  
 उन्हनि जी मिठी यादि में, मुंहिजी दिलि पगी ॥  
 तिनि जे चरण रज सां, ट्रे ई लोक तरनि ।  
 जिनि जे कृपा प्रसाद सां, चारेई फल फरनि ॥  
 प्रेम भगति में दृढ़ जे, तिनि चरणनि कयां वन्दनु ।  
 भगतु मथे जो मुकुटु आ, हियड़े जो चंदनु ॥  
 भगत गुणनि जो भूषणु, करे वाणीअ पहिरायां ।  
 अठई पहर अनुराग सां, जसिड़ो मां गायां ॥  
 तिनि कीरति कुण्डल करे, कननि में धारियां ।  
 तिनि जे चरण रज तां, ट्रे ई लोक वारियां ॥  
 लीला कमलु खणी हथिड़े, तिनि पूजियां प्रीतीअ साणु ।  
 दुभुज मां चतुर्भुजु थियुसि, तिनि भाकुरु पाइण काणि ॥  
 से बि प्राण प्यारा लगनि, जे भगतनि जसु ग़ाईनि ।  
 उहे साह सींगारु थमि, जे सन्तनि साराहीनि ॥  
 अहिड़ीअ रीति भगतनि जी, सन्तनि साख चई ।  
 अमड़ि ऐं साईं अ जी, दिलिड़ी ठरी पई ॥  
 जसु गाए सन्तनि जो, साईं आयुमि घरि ।  
 सभु सन्तनि में सरि, साईं साहिबु सिन्धु जो ॥

जिते वचननि विलास जो, छायेँ हो ऋतुराजु ॥  
सन्तनि ऐं महन्तनि सां, हुई सभा सींगारी ।  
बालिनि मिठिड़ी बोलिड़ी, जणु फूली फुलवाड़ी ॥  
सदा सतिसंग सुगन्धि जो, मधुपु मीरपुरि चन्दु ।  
नाम जी करे गुंजिड़ी, उति आयुमि आनन्द कन्दु ॥  
जेदो वदो जानिबु थमि, तेदो वदो संकोचु ।  
सो शीखुनि खां बिही रहियो, जंहि करिता दिए कोचु ॥  
अठई पहर अबल खे, आहे सतिसंग प्यास ।  
गदि गदि थो बुधण लगा, सन्तनि वचन विलास ॥  
शरणागति जे तत्त्व खे, सन्तनि साराहियो ।  
भिभीषण जे भाव खे, खोले दरिसायो ॥  
हिकु दृढु भरोसो धणीअ जो, बियो चितिड़ो निमाणो ।  
टियो सरलु थी सभु कुछु सले, चोथो वचन विकाणो ॥  
पंजो पद पद्मनि प्रीतिड़ी, छहों प्रतिकूलनि त्यागु ।  
उन्हींअ शरणि पियल खे, मिले मुहिब वटि मागु ॥  
भगत भिभीषण देव में, सभेई पूर्ण अंग ।  
साहिब खे सुखी करण जा, अठई पहर उमंग ॥  
तदहिं चयो रघु लादुले, तो जहिड़ा प्यारा सन्त ।  
जिनि लाइ लहां लाट तां, धारे रूप अनन्त ॥  
सन्तनि जे प्रसाद सां, माणियां लीला रसु भारी ।  
प्रेमियुनि ई प्रघटु कई, कथा कीरति प्यारी ॥  
प्रभूअ पुछियो प्यार सां, सखा हालु बुधाइ ।

रही राक्षस मंडल में, कीअ कयुइ भगति निबाहु ॥  
 जीअें दंदनि में जिभिड़ी, तीअें रहणु मुंहिजो ।  
 जिते किथे जानिब धणी, आहे भरोसो तुंहिजो ॥  
 नाम नरेश प्रताप सां, उते निर्भयु गुजारियुमि ।  
 संभारे साहिब खे, गूंदर में धारियुमि ॥  
 हनूमान हथिड़ो वठी, तवहां जे शरणि आंदो ।  
 मिलियो अभागे भागिड़ो, थियो हर्षिड़ो हेकांदो ॥  
 राति गुजिरी इन्हींअ रस में, थी पोई प्रभाति ।  
 माणे विन्दुर वरिसाति, पोइ साई आयुमि अडण में ॥

८

कनक भवन मन्दिर में, आयो शील सिन्धु साई ।  
 दर्शनु कयाऊं दिलिबर जो, जंहिजी सुरिति सदाई ॥  
 घणे सजि धजि शान सां, रहे राज धणी रघुनाथु ।  
 वाम भाग स्वामिनि द्विती, साई थियुमि सनाथु ॥  
 घणे अनुराग अदब सां, कयो दंडवत प्रणामु ।  
 आशीशूं द्विनियूं उमंग सां, सदां जीवो सियारामु ॥  
 जै अयोध्या आधारिड़ा, जै कौशलचन्द्र कृपाल ।  
 धर्म सेतु पालक प्रभू, जै दीननि प्रतिपाल ॥  
 कोटि चन्द्रवति ठंडिड़ा, कोटि सूरज प्रकाश ।  
 गंभीरु कोटि समुद्र जियां, कोटि गुणनि जी राशि ॥  
 भगतनि लाइ कोटि मातु पितु, पालकु तूं महरिबानु ।  
 सुर नर ग्राईनि जसिड़ो, थियनि कदमनि कुलिबानु ॥

शरणि पालकु सर्पधु प्रभू, द्रियनि अभय वरदानु ।  
 शेषु साराहे सहस मुख, करे गुणनि जो गानु ॥  
 शिव लोचन चकोर शशि, मुनि मन मानस हंस ।  
 साहिबु तूं साकेत जो, रघुकुल जो अवतंशु ॥  
 इन्हीं रीति उमंग सां, मिठे बाबल जसु गायो ।  
 शीलु सनेहु साई अ द्रिसी, रघुवरु मुशिकायो ॥  
 रस गुल्ला दोननि में, मिठे साहिब भेट धरिया ।  
 रीझ द्रिसी रघुवीर जी, साई अ नेण ठरिया ॥  
 अमड़ि बि घणे अनुराग सां, आशीशूं उचारियूं ।  
 सिकड़ी अ संवारियूं, दानी दशरथ राइ जे ॥

६

इन्हींअ रीति अवध में, माणे रस आनन्दु ।  
 पोइ आयुमि तीर्थराज ते, दासनि जो दिलिबंदु ॥  
 मिठे गंज फूल पुरीअ जी, सुन्दरु हुई धर्मशाल ।  
 उन्हीअ में आनन्द सां, देरो कयो दयाल ॥  
 सवेल जो साहिबु मिठो, घुमें कालन्दी तीरु ।  
 हिकु दानु द्रियनि दीननि खे, ब्रियो जपनि श्री रघुवीरु ॥  
 कदहिं निमुनि वणिकार में, कदहीं बड़नि जी छांव ।  
 घमेंमि प्रीतम रंग में, भुरलु भोरे भाव ॥  
 हिक वृक्ष जे छांव में, दिठो साधू वैरागी ।  
 नीरु वहाए नेणनि मां, लालन लिंग लागी ॥  
 बाबल तंहि भरिसां अची, कयो निउड़ी नमस्कारु ।



पुछियाऊंसि घणी प्रीति सां, छो रोई ज़ारें ज़ारु ॥  
 साधूअ चयो ब्रज भूमि जे, पसण जी थमि प्यास ।  
 कदहीं दिसां श्री कृष्ण जो, वृन्दा विपिन हुलासु ॥  
 दिलिबर जे दीदार लाइ, नेणनि निंड फिटी ।  
 दिसां शाल अखियुनि सां, गोकल गाम धिटी ॥  
 साईं अ चयुसि सनेह सा, तूं आहीं वदभागी ।  
 सोई धन्यु जगत में, जो ईश्वर अनुरागी ॥  
 बाबल दिनुसि भाव सां, भाड़े लाइ नाणो ।  
 सिधो वजी ब्रज देश में, दिसु सांवलु सियाणो ।  
 सुदिका भरे साधूअ चयो, आहे उकीर में आनन्दु ।  
 परियां वेही पल पल में, संभारियां सुख कन्दु ॥  
 गोलियां गोलियां न लहां, पियो पथिक पुछायां ।  
 हिते जमुना तीर ते, वर लाइ वाझायां ॥  
 इऐं चई अनुराग में, पियो नचे ऐं गाए ।  
 पखियुनि खे प्रीतम जा, संदेशा सुणाए ॥

• गीत •

बादल दिजांइ नियापो जसोदा जे लाल प्यारे ।

जमुना जो तीरु सुन्दर जिते गायूं गोविन्दु चारे ॥

१. गजगोड़ सां गोबिंद जी जै जै मनाइजांइ तूं,

अम्बृत जी वर्षा करे भुरलु भिजाइजांइ तूं ।

चइजांइ सांवल साधू साह साह में संभारे ॥

२. हिक गुवाल जे गोद्रे ते, मस्तकु रखी मन मोहन,  
सुन्दर तमाल छांव में, चोधारी शोभे गो धनु ।  
नंद वंश जो चन्द्रमां नैननि सां तूं निहारे ॥
३. दामिनीअ दमिकानि सां मतां दादुलो इंजारीं,  
ठंडिड़ी सुगन्धि समीर सां पुलकावली दियारीं ।  
दुआऊं दिजाइं दिलिबर मुंहिजूं आशीशूं उचारे ॥
४. तुंहिजी मिठी गजगोड़ ते मिली मोर सभेई नचंदा,  
ताड़ियूं वजाए गुवालिड़ा मुहिबत जे रस में मचंदा ।  
राजी कज़ाइ रस सां गोपियुनि जे नैन तारे ॥
५. कानलु कढ़ी कमरि मां, जदहीं बांसुरी वजाए,  
मृदंग जियां बादल तूं तंहि सां तार मिलाए ।  
सुरिड़े में सुरु तूं भरिजाइ संगीत सां संवारे ॥
६. ठंडक करण जे वास्ते बरिसाति कजाइ प्यारा,  
कीन गपिड़ी कजि धिटियुनि में, पहाए नीर नेसारा ।  
मतां भरिजी पवनि गप में पद पद्म प्राण प्यारे ॥
७. गायूं चारे गोविंदडो घरिड़े में जदहिं ईंदो,  
यशोदा अमड़ि जी दिलि जो मन भायो तदहिं थींदो ।  
पुत्र प्रेम पगली माता अची आरती उतारे ॥
८. यशोदा अमड़ि मोहन खे, मथिड़े ते हथु घुमाए,  
किरोड़ किरोड़ कुरिब सां प्यारो कृष्णु कंठि लाए ।  
खाराए मखणु मिस्त्री गुलु गोदि में विहारे ॥

१०

दिसी अनुरागु साधूअ जो, थियो साईं अ मन आनन्दु ।  
 हथिड़ा जोड़े हुब सां, कयो वंदनु तंहि सुख कंद ॥  
 असां बि दिजि आसीसिड़ी, अहिड़ी प्यास लगे ।  
 आनन्द कन्द अनुराग जी, जीअ में जोति जगे ॥  
 सन्त बि घणे सनेह सा, मिठी आशीश उचारी ।  
 साईं सुखकारी, सुखी रहेंमि सुहाग सां ॥

११

पोइ त्रिवेणी तीर्थ ते, आया संगति सांणु ।  
 पूजनु करे प्रीति सां, कयो तीर्थराज सनानु ॥  
 गोस्वामीअ सतिसंग खे, तीर्थराज चयो ।  
 घुमंदडु तीर्थु जग में, कुरिब सां कथनु कयो ॥  
 कर्म कथा यमुना मैया, सुरसरि भगति चई ।  
 सरस्वती ब्रह्म ज्ञान जी, सूक्ष्म धार वही ॥  
 टिनि धारुनि समागमु थियो, तदहिं त्रिवेणी नामु ।  
 दर्शन सां दासनि जा, थिये पूर्ण कामु ॥  
 भरतलाल भिजी भाव में, इहो घुरियो वर दानु ।  
 अर्थु न धर्मु न काम रुचि, पदु न चाहियां निर्वाणु ॥  
 जनम जनम श्री युगल जो, प्रेमु मिले प्रधानु ।  
 चयो एवमस्तु अनुराग सां, तीर्थराज महिरबानु ॥  
 प्रणामु करे प्रीति सां, साहिब कयो सनानु ।  
 दासनि नची नीर में, कयो गुणनि जो गानु ॥

जुगल बि कनि इश्नानिड़ो, दिलिबर धारियो ध्यानु ।  
 कदहिं भुलाईनि कीन की, प्रीतम प्रेम ज्ञानु ॥  
 इश्नानु करे वस्त्र कयो, दिनो दीननि दानु ।  
 जानिब कयो जल पानु, वेही संगति विच में ॥

१२

आयुमि अक्षय बट ते, सनानु करे साई ।  
 धिड़ियुमि सुंदरु गुफा में, चई जै जै रघुराई ॥  
 सर्वे रिषियुनि मुनियुनि जा, उते सरूप बिराजमानु ।  
 गुलिड़ा ऐं पैसा रखी, साई करे सन्मानु ॥  
 हिक हिक खे वंदनु करे, घुरनि सिक जो दानु ।  
 तोड़े पूरणु प्रेम में, त बि हुबिड़ीअ लाइ हैरानु ॥  
 सरूप ज़ाणनि कीन की, ज़ाणिनि सभु साक्षातु ।  
 इन्हीअ अचल विश्वास जी, दातर दिननि दाति ॥  
 जिते किथे जानिब जो, दिसे जलिवो जानी ।  
 खाली भांइनि कीन की, सभु लाल सां लासानी ॥  
 दासनि खे बि रिषियुनि जी, सुजाणप कराई ।  
 कथा तिनि जी कुरिब भरी, बचनि बुधार्ड ॥  
 अक्षय वट खे भाकिड़ी, बाबल अची पाती ।  
 अक्षय सुख सां साहिब जी, भरी रहे छाती ॥  
 उते बालमुकन्द जो, दिलिबर कयो दीदारु ।  
 बड़ जे सुदर पत्र ते, दिठो सांवलु सुकुमारु ॥  
 चरण कमल आंडूठड़ो, मुखड़े विझी धाए ।

दर्शनु करे बाल मुकन्द जो, साईं स्तुतिड़ी गाए ॥  
स्तुति बुधी अबल जी, बाल मुकुंद निहारियो ।  
साईंअ मनु ठरियो, मधुर मधुर मुसिकानि सां ॥

१३

सतिसंगियुनि साहिब खां, पुछो प्रीतीअ सांणु ।  
चरण कमल आंझूठिड़ो, छो चूसे भगवानु ॥  
प्रसन्न थी प्रीतम चयो, श्री बाल मुकुंदु महिरबानु ।  
समर्थु ऐं सर्वज्ञु आ, प्रेम अधीन सुजानु ॥  
भाव प्रिय भगवान खे, इहो पूरु पयो ।  
प्रेमियुनि मूं पद कमल में, वदो रसु चयो ॥  
अठई पहर पद पदम खे, था दिलि सां ध्याईनि ।  
चुमीं चटे नेणनि रखी, छातीअ सां लाईनि ॥  
हाइ हाइ ठरी पियुसि चई, हर हर साराहीनि ।  
भाव मगनु थी भगति सां, भरे भाकुर पाईनि ॥  
कहिड़ो रसु मुंहिजे चरण में, सो रसु ज्ञाणण लाइ ।  
खणी हथेलीअ में हरी, चूसे मुखिड़े पाइ ॥  
पर अगमु आनन्द कंद खे, सो सुगमु सन्तनि लाइ ।  
बियो रसु माणीदो उहो, जंहि सां सन्त सहाइ ॥  
धोपणु जिनि चरणनि जो, शंकर शीश धरियो ।  
जिनि चरणनि जे छाप आ, कालीअ त्रासु हरियो ॥  
जिनि चरणनि दण्डक बन, कयो परम पावनु ।  
गायुनि सां ब्रज में घुमें, जिनि चरणनि मन भावनु ॥

जिनि चरणनि जे रज सां, अहिल्या थियो उधारु ।  
 जिनि चरणनि प्रसाद सां, जीव थियनि भवपार ॥  
 तिनि चरणनि महिमा चवनि, शेषु ऐं सन्त कुमार ।  
 सेई चरण साई अ जा, असुल खां आधार ॥  
 चरण कमल जे ध्यान में, मगनु थियो साई ।  
 रहेंमि रस जे राज़ में, साहिबु सदाई ॥  
 अहिङ्गीअ रीति प्रयाग में, केई कया कलोल ।  
 पर सेई गातमि सिक सां, जे पाण चवायाऊं बोल ॥  
 साई साहिब सन्त जी, कीरति रतनु अमोलु ।  
 दासनि ढकणु ढोलु, सुखी रहेंमि सुहाग सां ॥

### •कवित•

साई महरिबानु दिए दीननि खे दानु,  
 करे संगति खे सांगु हरी आयो हरिद्वार में ।  
 सुरसरि तीर, जिते ठंडिड़ी समीर वहे,  
 गुणनि गम्भीर लथा पंडे जे आगार में ॥  
 माड़ीअ रहियो मीरु मुंहिजो पीरनि जो पीरु साई,  
 अंदरि उकीर रहे साकेत सरिकारि में ॥  
 करे सतिसंग सदा माणे रस रंग साई,  
 प्रेम प्रसंग नितु दाता दरिबारि में ॥१॥  
 पताशा ऐं गुल खणी, आया गंगा पुलि धणी,  
 स्तोत्र पाठ करे पूजा कई प्यार सां ॥

अटिड़े जूं गोलियूं ठाहे मछुनि खाराए साईं,  
 लहिरियुनि तरंग दिसे बाबलु बहार सां ॥  
 गंगा जी साराह करे शाहनि जो शाहु साईं,  
 पंहिजो रूपु चयो श्याम गीता में पुकार सां ॥  
 सुधा जलु पानु करे वेठा दिलि ध्यानु धरे,  
 आशीशिड़ियूं गंगा दिए लहिरियुनि जे द्वार सां ॥२॥

१४

गदि गदि गंगा तीर ते, साईं सैरु करे ।  
 दुखियनि बुखियनि दीननि खे, निवार्जीनि नेण भरे ॥  
 वस्त्र दियनि नंगनि खे, बुखियनि खाराईनि ।  
 कीर्तनु दिसी करतार जो, सिक सां साराहीनि ॥  
 ततल पिलेट फार्म ते, मांणहूं कीअ विहनि ।  
 इहो विचारे साईं मिठा, थधे जल धुअनि ॥  
 गंगा जल बालिटियूं भरे, साहिबु करे छिणिकारु ।  
 टाक मंझदि आ जेठ जी, त बि सेवा लाइ होशियारु ॥  
 सभ सेवा जो फलिड़ो, जुगल सुखु घुरनि ।  
 धरिती ततिलिड़ी दिसी, भिजी भाव झुरनि ॥  
 बाहिरि गंगा तीर ते, अन्दरि दण्डक बनु ।  
 मैथिलिचंद्र मालिक जी, मुहिबत मड़िहियुनि मनु ॥  
 थधो करे फरिशनि खे, पोइ कथा मंझि अचनि ।  
 कदहिं बुधी गीतड़ो, भरिजी नीह नचनि ॥  
 बाटिली देई बालक खे, अगियां ड्रोड़ाईनि ।

पाण बि उन खे वठण लाइ, डुकिड़ी पुज़ाईनि ॥  
 डुकन्दो दिलिबर खे दिंसी, चयो माणुहुनि क्यासु करे ।  
 तंगि न करि छोरा पीउ खे, हणूंइ चपाट भरे ॥  
 झले बिहनिसि जोश मां, अची साहिब छड़ाईनि ।  
 कसरत लाइ कौतुक करियूं, इऐं सभिनी समुझाईनि ॥  
 कलोल दिंसी करतार जा, गंगा भाव भिनी ।  
 सुवारी करे मछीअ ते, अची आशीश दिंनी ॥  
 अजरु अमरु हूंदे सदां, मिठिड़ा भैगसिचन्द ।  
 सुखी रहींमि सुहाग सां, दासनि जा दिलिबन्द ॥  
 साहिब तो सतिसंगिड़ो, सदा रहे काइमु ।  
 प्रेम उमंग ऐं नाम रंगु, रहेव दिलि दाइमु ॥  
 आशीश बुधी अनुराग निधि, कयो निउड़ी नमस्कारु ।  
 जानिब जो जैकारु, गदि गदि थी गंगा चयो ॥

१५

साई अ वटि आयो उते, महन्त गुरमुखु दासु ।  
 थलिहे जे सन्तनि जो, सेवकु हो सुखरासि ॥  
 श्रद्धावन्तु सुशीलु हो, भाव भरियो गुण धामु ।  
 दर्शनु करे दिलिबर जो, जंहि अचे थो आरामु ॥  
 घणियुनि यात्राउनि में, गदु आ जंहि धारियो ।  
 सची सिक श्रद्धा सां, सभु कारिजु संवारियो ॥  
 उमर मारुईअ जी कथा, तंहि खे बाबलु बुधाए ।  
 बोल बुधी बाबल जा, पयो आंसू वहाए ॥



पाण बि केतिरियूं सन्तनि जूं, गाल्हियूं बुधाए ।  
 मीरपुरि जे मीर खे, नितु नितु हर्षाए ॥  
 गढ़िजी गुरुमुखदास सां, आया पंडित वटि ।  
 केशवानंदु घणे कुरिब सां, उथी गढ़ियुनि झटि ॥  
 आदुरु देई अबल खे, पंहिजे भरिसां विहारियो ।  
 निउड़त दिसी नाथ जी, खिली खीकारियो ॥  
 प्रसन्न वदनु थी प्यार सां, पुछियो सिंधु जो समाचारु ।  
 शिवाऽहम् जो सिक सां, हर हर करे उचारु ॥  
 भुलाए पंडित पणे खे, थी वेठो बालक रूपु ।  
 साईं अ चयो सत्पुरुष जो, इहो आ शुद्ध स्वरूपु ॥  
 पंडित रंगु अनोखिड़ो, साईं अ सन्त दिठो ।  
 हथिड़नि सां करे हाजिड़ी, जपे मुख सां नामु मिठो ॥  
 श्रीरामनौमीअ जो दींहु हो, आनन्द रस भरियो ।  
 पंडित मन ई मन में, इहो सुन्दरु ध्यानु धरियो ॥  
 भए प्रघट कृपाला दीन दयाला, स्तान्नु उचिरियो ।  
 श्री रघुवीर मंदिर खे, फेरा देई फिरियो ॥  
 चरणामृतु घणी चाह सां, प्रमीअ पानु कयो ।  
 दिसी पंडित जे प्रेम खे, साईं अ सुखु थियो ॥  
 पोइ हथिड़ा जोड़े हुब सां, मिठे बाबल बोलिया बोल ।  
 तवहां त वेद विद्या में, आहियो सदा अद्रोल ॥  
 पोइ भाषा वाणीअ जा, कीअ गीतिड़ा गायो ।  
 मरमु सचो पंहिजे दिलि जो, खोले समुझायो ॥

तद्गहिं पंडित प्यार सां, मिठा वेण त बुधाय ।  
 पवित्रु पेंडो प्रेम जो, बुधु बाबल राया ॥  
 प्रेम देवु प्रघटु थी, पंहिजो धाको ज़माए ।  
 पोइ बंदो बेवसि आ, उहो जेकी ग़ाराए ॥  
 साई अ चयो सनेह सां, इहो सचु आहे ।  
 कवि सम्राटु गोस्वामि बि, इऐं थो फरिमाए ॥  
 प्रेम उमंग जी वेलिड़ी, प्रभू दरिसाए ।  
 बुद्धि संदा व्यापार सभु, छदे भुलाए ॥  
 पोइ सहजि ब्रौली जा जीव जी, साई थिए उचारु ।  
 सरल सज्जन जे दिलि में, थिए सनेह संचारु ॥  
 उहो थोर मुल्हो कंबलु सुठो, जेको थधिड़ी मिटाए ।  
 रेशिमी वस्त्रु कहिड़े कम जो, जेको सरिदी ना लाहे ॥  
 ब्रालनि भोलनि भगतनि जूं, अंटी संटी ब्रौलियूं ।  
 उहे लालन खे लोलियूं, मन्त्रनि खां बि मिठियूं लगनि ॥

१६

अमृत सरु आनन्द घरु, जिते सदा सिफति सालाह ।  
 पृथ्वीअ ते वैकुण्ठि जो, सचो निज़ारो आहि ॥  
 अमृतसर खीर समुंड जियां, दरिबारि शेषु समानु ।  
 ग्रंथु साहिबु श्री विष्णुदेव, कनि पारिषद गुणनि गानु ॥  
 उन्हीअ आनन्द भवन में, आयो अलबेलो साई ।  
 सोनी दरिबारि सतिगुर जी, दिसी वंदनु कयाई ॥  
 धनु धनु गुरु श्री रामदासु, धनु धनु अर्जुन देव ।

धनु धनु अविचलु साहिबी, धनु धनु सतिगुर सेव ॥  
 पिशोरियुनि धर्मसाल में, दिलिबर कयो देरो ।  
 सुबूह शाम दरिबारि में, भूरलु करे भेरो ॥  
 कणाहु प्रसादु कुरिब सां, खणी हले खावंदु ।  
 खाराए सतिगुरनि खे, सिक सां मीरपुरि चन्दु ॥  
 परिक्रमा देई प्यार मां, कनि प्रीति सहिति प्रणामु ।  
 गानु बुधे गवइयनि जो, आनन्द कन्दु अभिरामु ॥  
 गवइया गुर वाणीअ जो, कनि गदि गदि थी गानु ।  
 साईं सतिगुर सचे जो, दिलि में करिनि ध्यानु ॥  
 कहिड़े रस स्थान ते, था सतिगुर बालिनि बोल ।  
 उन्हीअ रस समुद्र में, लहनि टुब्बीअ सां टोल ॥  
 राम बन जो रस भरियो, दिलिबर दृश्यु दिठो ।  
 जिति वेठो प्रेम उमंग में, गुरु रामदासु मिठो ॥  
 पुलक शरीर गदि गदि गिरा, सजल नैन रस धामु ।  
 अत्यन्त मधुरी लाति सां, जपीनि राजा रामु ॥  
 शोभ्या शील सनेह निधि, मिठिड़ो राजा रामु ।  
 स सागरा धरितीअ धणी, मिठिड़ो राजा रामु ॥  
 साहिबु श्री साकेत जो, मिठिड़ो राजा रामु ।  
 शरणि पालु समर्थु सदा, मिठिड़ो राजा रामु ॥  
 अमुलु माणिकु श्री अवध जो, मिठिड़ो राजा रामु ।  
 अखंड ज्ञानु अगाधु मतु, मिठिड़ो राजा रामु ॥  
 पोइ रसीलनि छंदनि में, स्तुति उचारीनि ।

साई बुधनि उहे ब्रालिड़ा, रूपु बि निहारीनि ॥  
 वरी वरी वाणीअ जी, अचे मधुर ललिकार ।  
 भितियुनि में गूँजण लगी, इहा अनहद झनिकार ॥  
 सदिड़ो करे संगति खे, मिठे बाबल बुधायो ।  
 बुधी सतिगुर ब्रालिड़ा, तिनि हीअड़ो हरिषायो ॥  
 दर्शनु करे दरिबारि जो, दियनि प्यार सां परिक्रमा ।  
 उते निवनि साई अमां, जिते जिते सतिसंग दिसनि ॥

१७

सुखी रहेंमि सुहाग सां, साई जीअ जियारो ।  
 अदियूं आनन्द कन्दु आ, प्राणनि खां प्यारो ॥  
 गुर घर श्रद्धा सिक में, सभ खां सोभारो ।  
 गुर अमरदास जो चित्रु दिठो, घाघरि भरण वारो ॥  
 प्रेम में गदि गदि थिया, दिसी निर्मलु निज़ारो ।  
 चयाऊं निथावनि थाउँ तूं, गुरु अमरु उज्यारो ॥  
 साक्षातु सेवा रूपु आं, समरथु सचियारो ।  
 जाहिरु आहे जगत में, तवहां सुजस सतारो ॥  
 सेवा में सावधानु तूं, तोड़े मीहुँ वसे पारो ।  
 अहिड़ी सिक श्रीजू अमड़ि जी, हुजे आड़हड़ सियारो ॥  
 अठ पहर श्री जू क्यास में, झुरे जीउ जुसो सारो ।  
 गुर अमरदेव युगल खे, दियो आनन्दु उपारो ॥  
 गरीबि श्रीखण्ड ते गुरुअ कयो, महिरुनि वसिकारो ।  
 रातियां दिहाड़ो, रहे सालिमु सिक सज़ण जी ॥

१८

हिक दीहु अमृतसर ते, पिए साई सैरु कयो ।  
 जसिड़ो जुगल धणियुनि जो, चपड़नि मंझि चयो ॥  
 लहिरियुनि तां लुदं दी लगे, ठंडिड़ी सुखद समीर ।  
 साई समुझे सचखण्ड जी, उहा सदोरी हीर ॥  
 घुमन्दे हिक घिटीअ में, बुधी गुरवाणी झनिकार ।  
 साहिब सेवा में दिठा, प्रेमी उति अपार ॥  
 के कुटीनि किंकिरेट पिया, के खारा पिया ढोईनि ।  
 गुर वाणीअ जे लाति सां, मनड़ो पिया मोहीनि ॥  
 सेवा जो साहिब खे, सदा शौकु सरसु ।  
 सांगो दिसी सेवा जो, हीअड़े थियुनि हरषु ॥  
 सेवा में तत्परु थिया, साई संगति सांगु ।  
 सतिगुर अर्जुनु पाण, शोभे जीअें संगति में ॥

१९

भिनिसार जो भूरलु मिठो, करे बागनि जो सैरु ।  
 स्वागत लाइ समीर उति, विछाए गुलिड़नि ढेरु ॥  
 मौलसिरीअ जे छांव में, आसणु विछायो ।  
 वेठुमि पूरब मुखु करे, सिरु सूरिज निवायो ॥  
 सूरज मंडल में महिबूब जो, दिलिबर कयो दर्शनु ।  
 दासनि दिठो दिलि धणी खे, विखंह लाइ प्रसन्न ॥  
 हथ जोड़े हलीमु थी, करे प्रीति पुछियाऊं ।  
 सदा कयव साहिब मिठा, किरोड़ें कृपाऊं ॥

बाबल भगति भंडार मां, के बोलिड़ा बुधायो ।  
 कहिड़ा सनेहियुनि सुभाविड़ा, से खोले समुझायो ॥  
 खुरिपे सां कसिरत कंदे, बाबल बोलिया बोल ।  
 गीता में गोविंद चया, जेके वचन अमोल ॥  
 जिनि खे हिकिड़ी आश आ, हिकिड़ी लगल लोड़ ।  
 हिकिड़ी तलिब ताति हिक, हिक जानिब सां जोड़ ॥  
 से भगत भाग्यवन्त से, सेई रसिक सेई सन्त ।  
 से प्रेमी परिवानु से, चया कथा जे कन्त ॥  
 जिअें वर्षा में नदियुनि जो, नितु नितु नीरु वधे ।  
 तीअें तिनि श्रद्धा सिक जी, चौगुनी वीरि चढ़े ॥  
 भगतनि जो सुन्दरु हृदयु, आहे रस सागरु ।  
 चरित्रनि रूपु निर्मलु नदियूं, जिते अचनि उजागरु ॥  
 नवनि नवनि भावनि जा, प्रवाह नितु पाए ।  
 त बि हृदय समुद्र खे, अजां उज आहे ॥  
 अहिड़े खीर समुद्र में, साहिबु शैनु करे ।  
 भाव भरियनि भगतनि खे, भूरलु अंक भरे ॥  
 पाणु छड़े प्रीतम जे, जेके थिया सुखनि में लीनु ।  
 प्रीतम रूप समुद्र में, मनु कयो जिनि मीनु ॥  
 सभ इन्द्रियुनि जे वृत्ति खे, कयो प्रीतम आधीन ।  
 रग रग में जंहिजे वज्रे, मधुर नाम जी बीन ॥  
 मन वाणी काया जी, हिक दिलिबर दे दौड़ ।  
 पखियुनि खां पतिड़ा पुछे, करे वणनि में वौड़ ॥

अठई पहर ध्यान सां, जिनि सोघो कयो साई ।  
 रांझनु करे उति राजिड़ो, ज़ाणी घरिड़ो सदाई ॥  
 भोग मोक्ष जा ग्राकिड़ा, जिनि छड़िया मोटाए ।  
 विरूंह जे वापार में, वेठा लिंवड़ी लगाए ॥  
 जिनि मनु दिनो सर्वसु दिनो, सभु सज़ण जो ज़ातो ।  
 बिना मुल्ह ब्रान्हां बणियो, वारे खतु खातो ॥  
 तिनि जे योग क्षेम जो, सभु भूरलु बारु खणे ।  
 जो किंकरु कोठाए कृष्ण जो, बिए जो कीन बणे ॥  
 पाण प्रभूअ श्री मुख सां, इहे वचन फरिमाया ।  
 अनन्य चित वारनि जा, सभु कारिज सजाया ॥  
 लीला रस चिन्तन में, जे मगनु रातियूं दीहैं ।  
 विरह जे वणिकार में, वसाईनि आंसुनि मीहैं ॥  
 दवा लाइ बि पाप जी ज़री, जिनि वटि आहे कान ।  
 प्रेम सां पावनु बणियां, तीर्थनि खां बि महान ॥  
 रस पूर्ण जस पूरण, से ज्ञान पूर्ण गुणवन्त ।  
 पूरणु परा प्रेम में, ज़णु पूरणता जा कन्त ॥  
 काशी बि मुक्ति दियण में, तोड़े समरथु आहे ।  
 पर मुक्ति मिलन्दी उन खे, जेको प्राणनि गंवाए ॥  
 हिमाचलु बि हरीअ सां, बेशकि मिलाए ।  
 पर पहिरीं ग़ारे बर्फ में, पोइ पावनु बणाए ॥  
 गंगा बि पवित्रु करे, पहिरींअ दुब्रीअ सांणु ।  
 पर बुढ़णु जो भउ घणो, मतां लोड़िहे प्राण ॥

सूरिजु भी प्रकाश मयि, करे अन्दरु न उजालो ।  
 हिक दीहु पूरणु चंद्रमा, हिक दीहु रहे खालो ॥  
 बादलु वर्षा ऋतु में, चित खे करे उदारु ।  
 वर्षाऋतु बिनु उन जो, खाली रहे भंडारु ॥  
 पर प्रेमी खजानो नाम जो, जिअें जिअें लुटाईनि ।  
 तीअें तीअें अखुटु भंडारिडो, नाम खां नितु पाईनि ॥  
 खावनि खरिचनि तोटि न आवे, नितु नितु वधंदो जाई ।  
 उदारता आशिकनि जी, आहे सभ खां सवाई ॥  
 कोटि काशीअ खां भी सरसु, समरथ सन्त सुजान ।  
 हिकिड़ी कृपा कोर सां, कनि जीवन मुक्ति पद दान ॥  
 हिमाचल खां हरि भक्त जो, ऊचो आ स्थानु ।  
 गगन गंगा खां भी निर्मलु, प्रेमी आहिनि प्रधानु ॥  
 जिनि जे वाणीअ में सदा, प्रभू गुणनि जो गानु ।  
 कथा सां कनिड़ा भरिनि, धारीनि दिलि में ध्यानु ॥  
 जिति किथि जिनि जूं अखिड़ियूं, प्रीतम रूपु पसनि ।  
 चकोर जियां मुखचन्द्र खे, दमि दमि दिसी हसनि ॥  
 मन में श्री महिबूब जी, ओर सदा ओरीनि ।  
 तन मन प्राण धन धाम सभु, घोट मथां घोरीनि ॥  
 हिकु पलु वेसरि जे थिए, त किरोड़ मरणु भाईनि ।  
 ईश्वर खे बि अचरजु लगें, त कीअ था लिंव लाईनि ॥  
 अहिड़नि महापुरुषनि जी, जे भाग सां जूठि मिले ।  
 त ओदी महल अनुराग में, खावंद सांगु खिले ॥



रहूगण खे जड़ भरत भी, इहोई द्रसियो ज्ञानु ।  
 हिक्कु सेवा करि सन्तनि जी, मिटाए मन मां मानु ॥  
 ब्रियो सतिसंग सरिता में, सदा करि सनानु ।  
 टियों हरी नाम जे रंग में, पावनु करि पंहिजो प्राणु ॥  
 चइनि वेदनि जो सारु थेई, इहे वचन प्रणामु ।  
 इहो भगतनि जसु महानु, बाबल बुधायो ब्रचनि खे ॥

२०

महिर भरियो मालिकु मिठो, लाहोर में आयो ।  
 सुपने में सज़ण खे, लव हो लीलायो ॥  
 बस्तीराम मंदर में, अची देरो कयाऊं ।  
 प्यारे लव-कुश लाल जी, चयड़ी चयाऊं ॥  
 कणाहु कराए गुरुनि जो, वंदनु वीर कयो ।  
 सतिगुर अर्जुन देव जो, जसिड़ो खूबु चयो ॥  
 देर साहिब जे दरस लाइ, अदब सां आया ।  
 सुगंधी हार गुलनि जा, सतिगुर पहिराया ॥  
 अमड़ि झुलाए चंवरु थी, साईं वचनु वठण वेठा ।  
 गुर-वाणीअ जे रस में, प्रीति मंझा पेठा ॥  
 कीर्तनु थिये करतार जो, बुधदे दिलि ठरी ।  
 अबल खे आनंद जो, उमंगु हर घड़ी ॥  
 पंहिजे हथिड़नि गुलनि सां, साईं पंखो झुलाईनि ।  
 सेवा कनि सत्संग जी, पंहिजो पाणु बि भुलाईनि ॥  
 धोई चरण दर ते, सिदिकी सिख अचनि ।

बुधी गुर-वाणी खे, महिबत मंझि मचनि ॥  
 उन्हींअ चरणनि जल सां, साई करनि सनानु ।  
 प्रेमु आहे परिधानु, मिठिड़े मीरपुरि मीर जो ॥

२१

जै सतिसंग जे घोट जी, जै सति-संगति सरिदार ।  
 जै सतिसंग सींगार जी, जै मीर पुरि मनठार ॥  
 जै सतिसंग सुहाग जी, जै सति संगति जा शाह ।  
 जै सतिसंग सूरज जी, जै जै निमाणनि नाह ॥  
 साई जे सतिसंग में, नितु कथा जी हुब्रिकार ।  
 नवनि नवनि भावनि सां, कनि गुणनि जी गुफितार ॥  
 हिकि दींहु रघुवर जन्म जी, थी कथा कुरिब भरी ।  
 भाव आवेष में मगनु थियो, हर्षनि भरियो हरी ॥  
 नौबत वजे नीह जी, दुआरे दशरथ राय ।  
 फूली फिरे अडण में, मिठिड़ी कौशल माय ॥  
 याचिकनि जी दर ते, वाह जा भीड़ मती ।  
 दान लुटाए दिलि सां, बुढिड़ो अवध पती ॥  
 सभु आशीशूं दियनि उमंग सां, चिरजीवे राघवुलालु ।  
 पीरीअ में पुटिड़ो मिलियुइ, त्रिभुवन जो प्रतिपालु ॥  
 तद्गहिं याचक रूपु जानिब बणी, बोले मिठिड़ा बोल ।  
 साकेत जे साहिब सां, जननी भरियइ झोल ॥  
 कौशलराज जी लादिली, दशरथ पट राणी ।  
 राम जननी श्री राम जा, रसिड़ा नितु माणी ॥

घड़ीअ घड़ीअ गदि गदि थिएँ, दिंसी राघव बाल विनोद ।  
 पीरीअ में पुटिड़नि सां, गुरुअ भरी थेई गोद ॥  
 इऐं चई उमंग में, नचण लगा साई ।  
 भुरलु भाव जे राज में, घुमेंमि सदाई ॥  
 जीएई राघवु लालु, अमड़ि तुम्बड़ा भरे दे ।  
 जीएई लखणु लालु, अमड़ि तुंबिड़ा भरे दे ॥  
 जीएई भरतु बालु, अमड़ि तुंबिड़ा भरे दे ।  
 जीएई शत्रुघनु शाल, अमड़ि तुंबिड़ा भरे दे ॥  
 दिंसी उमंगु अबल जो, सभु दास बि नचण लगा ।  
 जीए रघुवरु लादिलो, चई प्रेम मति पगा ॥  
 किनि खयूं खारियूं मथनि ते, किनि लोटो किनि थारी ।  
 किनि खे किटिलियूं कछ में, सभु भाव मगनु भारी ॥  
 दशरथ राज महल जो, छांयो अजबु निज़ारो ।  
 साई सिंधु वारो, उते आशीशूं दिए उमंग सां ॥

२२

लवपुरि खां लालन कई, कश्मीर दे तियारी ।  
 नानाणां भरतलाल जा, हली दिंसूं हिक वारी ॥  
 ज़मूं नगर में टवीअ ते, हुओ ठाकुर जो मंदिरु ।  
 राति रहिया उते रस सां, पोइ आया शहर अंदरि ॥  
 श्री रघुनाथ मंदिर में, जानिब जाइ मिली ।  
 वाह सज़ण लधइ सारिड़ी, खावंद चयो खिली ॥

जिते रहे जानिबु मिठो, उते सदा बसन्त बहारु ।  
 सभिनी खे प्यारो लगे, मीरपुरि मनठारु ॥  
 हिकिड़ो शोभा सिन्धु आ, ब्रियो दिलि जो घणो उदारु ।  
 टियों तेजु हरि भगति जो, चोथों अड़ियनि आधारु ॥  
 पंजो पूरणु प्रेम में, परा प्रेम खां पारि ।  
 छहों दीनता दिलि में, सतों सोज़ जी वजे सितार ॥  
 अठों गुणु अजीब जो, सरलु शीलु सुकुमारु ।  
 नाओं नीह निबाहिण में निपुणु, द्रहों द्रदनि दातारु ॥  
 यारिहों जसु जगत में, ब्रारिहों वैदेहल ब्रारु ।  
 तेरिहों तीर्थनि खे पावनु करे, चरण घुमाए चोधारु ॥  
 चोद्विहों चतुरु चूड़ामणि, सभा जो सींगारु ।  
 पंधिरिहों प्रसन्न वदनु नितु, हर्षु हुलासु अपारु ॥  
 सोरिहों सीय रघुवीर जे, नाम जो कयो सुकारु ।  
 सोरहनि कलाउनि सां सज़णु, अलख जो अवितारु ॥  
 कंहि खे न मिठिड़ो लगे, अहिड़ो शील भंडारु ।  
 हिकिड़ी लाखीणी लोद आ, ब्री मुशिकण जी मधु धार ॥  
 टियां सब्राझा ब्रोलिड़ा, चोथी कथा जी किलिकार ।  
 पंजो कथा जे विच में, कनि गीत मधुर गुंजार ॥  
 छहों छिके दिलि सभिनी जी, रसिकु सन्तु रिझवारु ।  
 सतों संह भरियो सुलछिणो, साहिबु सदा सचारु ॥  
 अठों अजबु अलिबेलिड़ो, बाबलु बखिशन हारु ।  
 नाओं निर्मलु नीह भरियो, नेहियुनि में निर्वारु ॥

गुणनिधि रसनिधि जसनिधि, दीनबन्धु दिलिदारु ।

गरीबनि गमटारु, साईं साहिब सिंधु जो ॥

•गीतु •

शील मणी प्रेम धणी, साईं प्यारा ।

पल पल आशीश दियाइ, जीअ जियारा ॥

गुलइनि जी सेज ठाहे, तोखे विहारियां ;

प्रेम-भिनी माधुरी तुंहिजी, नाथ निहारियां ।

प्रीति-पुष्प चयनु करे, तोखे सींगारियां ;

दरस तां दिलिदार जे, ट्रेई लोकिड़ा वारियां ।

गोद भली लालु लली, जगत् उजियारा ॥

दिलि में दिलिबर जो लादु, नेणनि नीहु आ ;

रोम-रोम तुंहिजे वसे मधुर मीहु आ ।

रसना में रामु नामु, राति दीह आ ;

प्राणनि में प्राणनाथ, प्रेम-पीह आ ।

तवहां जे कथा कुंज वसनि, दशरथ दुलारा ॥

विरह जी वणिकार, मिलण मौज भरी तो;

कोकिल जी कूक हिये, हूक हरी तो ।

जुगल चरण धोता लाए, नैन झड़ी तो;

कीरति प्यारे कंत जी आ, जीअ जड़ी तो ।

माखीअ मिठी सिकिड़ी सुठी, अमल उदारा ॥

अमरनि खां ऊंचो तुंहिजो, भागु आ जानी;

ट्रिन्ही लाकनि कीन दिसां, साहिब जो शानी ।

राग तुहिंजे रीथो रहे दशरथ दानी;  
 गोलनि जे गलिड़े में विधइ, गुणनि जी गानी ।  
 चपिड़ा लालु कनि निहालु, वचन जी धारा ॥  
 भगति जो भण्डारु खोले, लाल लुटाई;  
 दीन दुखी जीवनि, सची विन्दुर वसाई ।  
 अनुभवी आकाश जा नितु, बोल बुधाई;  
 ललित लीला लाल जी थो, अंधनि लखाई ।  
 मैगसिचन्द्र आनन्द कन्द, सत्संग सहारा ॥

२३

सांझीअ जो नाम कीर्तन जी, छाई मधुर धुनी ।  
 गगन में सिक सां बुधनि, देविता ऋषी मुनी ॥  
 छेरि ब्रथी नचण लगो, उधो अनुरागी ।  
 जंहिजी जुगल जे नाम में, सहिजे लिंग लागी ॥  
 जदहिं नाम जे धुनि जी, तार ब्रझी वेई ।  
 अबलु आयुमि ओचितो, पोइ खबर पेई ॥  
 चरण कमल खणी तार ते, नचण लगमि साई ।  
 दासनि जी दिलिड़ीअ चयो, जियोमि सदाई ॥  
 अबल तदहिं अनुराग सां, गीत तुकिड़ी उचारी ।  
 भिनल राति चांडोकिड़ी, छाई चौधारी ॥  
 कोकिल कूजति कण्ठ सां, बोले दिलिबरु सांइ ।  
 आउं वजां थी साहुरे, बाबल लगनु गणाइ ॥

•गीतु •

आउं वजां थी साहुरे मिठा बाबल लगनु गणाइ ।

लगनु गणाइ बाबा, लगनु गणाइ ॥

वर वारी नारी सदा सोभारी, रीझाए हरि राइ ।

कीन छर्दीदसि पति जो मां पासो, उहो मुंहिजो आसरो आहि

॥

दूरहुँ आयसि चलि के बाबल, तकिड़ियमि तो शरणाइ ।

आशा रखियमि चित में, मुंहिजो सभोई दुखिड़ो लाहि ॥

मां विचि ललु न लछणु बाबल, नका कयमि कमाइ ।

तुंहिजिड़े राज़ फिरां अलबेली, वतां ब्रांह लुद्राइ ॥

आओ भेणे गलि मिलउ, मेरी अंक सहेलड़ियाइ ।

मिलि करि करहिं कहाणियां, समरथ कन्त कीयाइ ॥

गुण कामिणि करि कन्त रीझावां, सतिगुरु थियेमि सहाइ ।

आउं अयाणी इश्कु न ज़ाणां, मुंहिजो निर्मलु नीहु निबाहि ॥

बाबे नानक बुसरियूं पचायूं, पाइयां थाल्हे मांहि ।

जिनां मनायो सतिगुरु सचिड़ो, रज़ि रज़ि सेई खांहि ॥

२४

दिलिबर दासनि जा धणी, दीनबन्धु दातार ।

दासनि वत्सल दासनि रक्षक, करुणानिधि करितार ॥

हिक द्रीहु वेठा अडण में, जोतिषी हिकु आयो ।

मां असुलु मिथिलापुरि जो, इऐं बाबल बुधायो ॥

बुधी नामु पिर देश जो, साईं हियो भरिजी आयो ।

पोइ पंज प्रश्न प्रीतम अबल, पत्र मंझि लिखिया ।  
पत्र सां गदु अंब पंज, पंडित वटि रखिया ॥  
प्रश्न पड़िही प्रीति सां, मुशिकियो मिथिला निवासी ।  
वाह सुखदेवीअ सुवनिड़ा, तो गाल्हि पुछी खासी ॥  
महाभाग्य तुंहिजे भागु में, लिख्यो सुखिड़ो अविनाशी ।  
रीझायो थई रस सां, साहिबु सुखराशी ॥  
लिकाए प्रश्न रांझन लिख्या, पण्डित पड़िहिया बि लिकाए ।  
तिनि उत्तरु बि लिकाए दिनो, सनेहु साराहे ॥  
विनय ते प्रमियुनि खे, मिठे साहिब बुधाय ।  
प्रश्न तोड़े उत्तर सभु, सच्चे साईअ समुझाया ॥  
पहिरियो प्रीतम पार दे, कढ़हिं वजणु थींदो ।  
माणियूं सुखपति सेजड़ी, इहो दांगु दद्रीअ दींदो ॥  
टियो त्रिगुण पार जे नाम जो, जापु कढ़हिं मिलंदो ।  
सदां वसूं बृज देश में, सो भागु कढ़हिं खुलंदो ॥  
जीअरे मिलूं जानिब सां, इहा पूर्णु थींदी प्यास ।  
कुर्बानु थियूं कदमनि तां, इहा इन्दर में अभिलाष ॥  
सभु दिलासा दिलि घुरिया, ज्योतिषीअ अजु दिना ।  
बुधाईदे बाबल जा, रस में नेण भिना ॥  
दिनो दिलिबर देश जे, वासीअ दिलासो ।  
श्री वृन्दावन वासो, थींदो सतिगुर महिर सां ॥



## •कवित•

हाणे हलो कश्मीर जेको झलम जे तीर

वहे ठण्डिड़ी समीर अदी वाह वाह वाह ।

आयो साईं सुकुमारु सत्संग जो सींगारु,

सदा दिलि जो उदारु चओ वाह वाह वाह ॥

पसी निर्मल निज़ारा बर्फ टकरनि वारा,

थिया आनन्द अपारा चओ वाह वाह वाह ।

हिक टेढ़ी हुई राह ब्रियो चाड़िही ऐं लाह,

दिसी दिलि खे थिए चाह चओ वाह वाह वाह ॥

२५

राजा प्रताप भवन में, अची दिलिबर कयो देरो ।

गूजंदो रहे हरी नाम सां, खावन्द जो खेरो ॥

धुमण हलनि वणिकार में, साहिब सवेरो ।

धुमेमिं थो श्री नगर में, पर नाम नगर नेरो ॥

किथे झरिणा जबलनि तां लहनि, वसे बूंदुनि फुहारो ॥

किथे गहिरा झंगल गुलाब जा, माणे सुगन्धि सोभारो ।

उति एकीह गुलनि जो, हिकु झुगिटो दिठाऊं ।

ही ठाकुर लाइ गुलदस्तिड़ो, इऐं मन में चयाऊं ॥

शौकु दिसी साहिब जो, सिधो आयो बनमाली ।

गुलनि थाल्हीअ गुलदस्तिड़ो, दिनी दातर खे दाली ॥

गुलाब जे बनिड़े खां, आया चनार जे वणिकार ।

जहिंजे सुन्दर छांव जी, महिमा चवनि अपार ॥

मालिक मधुरी मौज में, उन छाया मंझि घुमनि ।  
 कैसरि मिलियल धूलि कण, दिलिबर चरण चुमनि ॥  
 आरोग्यु करे शरीर खे, उतां जी ठण्डिड़ी हीर ।  
 बल तेजु वधाए तन में, कांडर बि थियनि वीर ॥  
 कदहिं घुमनि झंगलनि में, कदहिं नदीअ तीरु ।  
 कदहिं सैरु करे बाज़ारि जो, मालिकु मीरपुरि मीरु ॥  
 दिलिबरु दुशाला वठे, कदहिं लोयूं चुकाए ।  
 महांगी वठनि मौज में, चवनि घणो सस्ती आहे ॥  
 चवनि अजु वाणिए खे, फुरे आहियूं आया ।  
 तोड़े देई अचनि दातार उति, पैसा सवाया ॥  
 जितां सौदो वठे साहिबु मिठो, से वाणिया वदभागी ।  
 उहे बि कदहिं अवसि थियनि, ईश्वर अनुरागी ॥  
 सहजि दर्शनु सत्पुरुषनि जो, करे अन्दरु उजियारो ।  
 साई त सन्त सिरताजु आ, साहिबु सोभारो ॥  
 कदहिं चड़िही ब्रेड़ीअ ते, सैरु करे साई ।  
 साहिब दिना थनि सुहिज में, सुखिड़ा सदाई ॥  
 अविनाशचन्द्र अलबेलिड़ो, अतिलड़ आत्माराम ।  
 सौभाग्यशाली सुवनिड़ो, सुखदेवी सुखधाम ॥  
 गरीबनि सां गद्विजी घुमें, विन्दुर जे वणिकारि ।  
 दिलि मेली दोस्तनि सां, बरु बि आहि बाजारि ॥  
 आशीशूं आनन्द कन्द खे, भरे दियूं झोलियूं ।  
 चितनि जूं चोलियूं, जिनि रंगियूं राघव रंग में ॥

२६

तोड़े रहनि राघव रंग में, त बि देवनि मनाईनि ।  
 पतिव्रता सतीअ जियां, सुहग सुख चाहींनि ॥  
 श्री नगर खां ब्र मेल परे, हिक सुन्दरु पहाड़ी ।  
 जिते बादाम वृक्षनि जी, वाह जा बहारी ॥  
 उते दुर्गा देवीअ जो, बुधो मन्दिरु रसीलो ।  
 दासनि सां गढ़िजी उते, आयो दासनि वसीलो ॥  
 पूजारीअ घणे प्यार सां, कयो साहिब जो सत्कारु ।  
 साईं बि घणे सनेह सां, कयो देवीअ दिव्य दीदारु ॥  
 देवीअ जो दर्शनु करे, दिलिड़ी पियनि ठरी ।  
 वाह जो दिव्य दर्शनु आ, चवनि हर घड़ी ॥  
 थाल्ही कटोरो चांदीअ जो, जंहिते लिख्यलु मैगसि नाम ।  
 देवीअ जे भेटा दिनो, आनन्द कन्द अभिराम ॥  
 सवासेर चांवरनि जी, मिठी तांहिरी रंधाई ।  
 अन्नपूर्णा अमड़ि अची, जणु पाण त बणाई ॥  
 भोगु आयो जढ़हिं मन्दिर में, चयो प्रेम सां पूजारी ।  
 पाण खारायो देवीअ खे, दिलिबर दातारी ॥  
 साईं साहिब सनेह सां, पोइ मन्दिर में आया ।  
 घणी श्रद्धा सनेह सां, भोजन खाराया ॥  
 दुर्गा सप्तशतीअ जो, प्रेम सां पाठु कयो ।  
 गदि गदि थिया गुण गान में, थियो आनन्दु अण मयो ॥  
 जै जगदम्बा दुर्गा माता, जै गिरिराज किशोरी ।

जै खट वदन गजानन माता, गुण निधान गोरी ॥  
 जै शैल कन्या सुखदायनी, जै उमा महाराणी ।  
 जै राम कथा रिझवारिणी, कैलाश धयाणी ॥  
 जै शंकर सत्संगिणी, प्रेम परा प्रवीन ।  
 श्री राम नाम प्रताप में, रहीं सदां लवलीन ॥  
 अनहदी झनकार जो, माता दिजांइ द्राणु ।  
 साहिब साकेत नाथ जे, रहूं सेवा मंझि सुजाणु ॥  
 क्यास में दिलि कड़हन्दी रहे, थियां दर्द में देवानी ।  
 जीअरे दिसां नेणनि सां, साहिबु सुख खानी ॥  
 जै वर दाता गौरी माता, सब जी सुख दाता ।  
 जो जन ध्यावे मायड़ी, मन वांछित फल पाता ॥  
 अमड़ि दिजांइ अण गणियों, अब्जालनि आनन्दु ।  
 सुखी रहेमिं सुहाग सां, मालिकु मैथिलि चन्दु ॥  
 प्रेम भरी प्रार्थना बुधी, प्रसन्नु थी मैया ।  
 गद् गद् वाणीअ सां चयो, जीउ सत्संग खिवैया ॥  
 सभु अभिलाषूं तुंहिजिड़ियूं, कयूं पूर्ण परमेश्वर ।  
 सदां तोते कृपालु आ, जग गुरु जग ईश्वरु ॥  
 जिति किथि देश प्रदेश में, तुंहिजो राखो श्री रमेशु ।  
 भगति भावु हृदय भरे, भोलानाथु महेशु ॥  
 इहा आशीश उमंग सां, दिनी गणपति महितारी ।  
 बम् बम् जो आवाजिड़ो, कयो शंकर त्रिपुरारी ॥  
 सदां आशीशुनि अगिरो, साई सन्तु सुजानु ।

भोगु लगाए भाव सां, आयो मन्दिर मां महिरबानु ॥  
 प्रसाद वारी तांहिरी, दिनी सभिनी विराहे ।  
 खाइण सां गद् गद् थी, चयो सभिनी साराहे ॥  
 अबल अलोकिक सवादिङो, तांहिरीअ में आहे ।  
 साईअ बि चयो प्रसाद जे, मटु अमृतु नाहे ॥  
 अहिङा रस आनन्दङा, नितु साई माणाए ।  
 जंहिखे लिंव लाए, सुखी रहनि सत्संग में ॥

२७

सत्संगु साई साहिब जो, आहे देवनि खे दुर्लभु ।  
 ऋषी मुनी सिकंदा वतनि, सो सिंधियुनि लाइ सुलभु ॥  
 हाणे .बुधो हाकिम जे, कथा जी किलकार ।  
 जंहि साराहे साकेत धणी, सा लालन जी ललिकार ॥  
 .बी बजे मंझंदि जो, रोजु थिए सत्संगु ।  
 विशेष करे कश्मीर में, थियो करुणा जो प्रसंगु ॥  
 हिक दीहुं जमुना पुलनि जो, कयो कथनु निजारो ।  
 जदहिं यारिहां पहर जमुना ते, रहियो दशरथ दुलारो ।  
 कालागुर चन्दन जी, हुई रस भरी वणिकार ।  
 जमुना बि मधुरु लाति सां, कई आजियां जुगल सरकार ॥  
 वेठमि जमुना तीर ते, मृग छाला विछाए ।  
 सावनि पननि जो विजिणो, पियो लछिमणु झुलाए ॥  
 दिसी यमुना तरंगिङा, थियो जुगल मन आनन्दु ।  
 राज खां घणो रस भरियो, थियो बनिङो रघुकुल चन्द ॥

सुधा सरसु बोलिया बोलिड़ा, दशरथ दुलारे ।  
 प्राण प्रिया पार्थिवीअ दे, नीह सां निहारे ॥  
 सरजूअ खां बि सरसु थियो, कालन्दीअ किनारो ।  
 निग्रोध बट जे छांव जो, आहे पसिरियलु पसारो ॥  
 कोकिलि ऐं मोरनि जूं, अचनि ललिकारूं ।  
 खरिज ऐं पञ्चम जूं, जणु वजनि सितारूं ॥  
 शाल ताल तमाल जा, गहिबर आहिनि बनिड़ा ।  
 जिनि हरी हरी आभा दिसी, मस्तु थियनि मनिड़ा ॥  
 अम्ब अशोक अंजीर, सुन्दर पनस खजूर ।  
 लौंग केतकी चम्पक जे, वलियुनि सां भरपूर ॥  
 सुन्दर पुष्प सुगन्धि खणी, ठण्डिडी वहे समीर ।  
 गुंजार करे कमलनि ते, भंवरनि सुन्दरु भीड़ ॥  
 भली बाबा बनिड़ो दिनो, केद्री कृपा कयाई ।  
 बनिड़े में आनन्दु आ, किरोड़ राज्य न्याई ॥  
 गद् गद् थी घणे उमंग सां, चयो जनक किशोरी ।  
 बनिड़ो थियो मंगल मयी, जणु अमृतु वरिषियो डी ॥  
 अमड़ि जे आशीश सां, थियो बनिड़ो सुखदाई ।  
 कृपा श्री कौशल्या अमड़ि जी, जिति किथि सहाई ॥  
 लखण आणि कन्द मूल तूं, चयो रघुवर समुझाए ।  
 बुखिड़ी लगी आहे, श्रीजू अति सुकुमारि खे ॥

• कवित्त •

कन्द मूल खणी आउ लादिला लखण लाल,  
 श्रीजू सुकुमारि कीँअँ, बुखिड़ी सहारीदी ।  
 डोड़ पाइ दिलिबर देरि न लगाइ दमु,  
 हेदी महल अडण में अमड़ि संभारीदी ॥  
 निंडिड़ीअ में भरिया नेण बोलिनि तोतिड़ा वेण?  
 सदां माणे सुख चैन धीरु कीँअँ धारीदी ।  
 गरीबि श्रीखण्डि चवे कोकिलि जी लाति लवें,  
 सिया सूरवीरि आ हिंयड़ो न हारीदी ॥१॥

लादुलो लखणु वियो प्रिया खे प्रीतम चयो,  
 करियो विश्रामु जेसीं मोटी अचे भायड़ो ।  
 वरिड़े जी गाल्हि वणी रिछिणि जो बालु खणी,  
 लेटी निमि कुल मणी करे चित चावड़ो ।  
 प्रिया जो दिसी कलोलु ढरी पियो रामु ढोलु,  
 आनन्दु अमोलु नैन प्राणनि समायड़ो ।  
 गरीबि श्रीखण्डि बोले खुशियुनि जी खाणि खोले,  
 रस जे हिंडोले झूलो, पवे सुठो दाउड़ो ॥२॥

निद्रा देवी गोद में विनोद सां विश्रामु दिनो,  
 भिनो रस नीह में राघवु अलबेलिड़ो ।  
 रूप माधुरी निहारे सधियो सुखु न संभारे प्रभु,  
 टेई लोक वारे दिसी खुशीअ जो खेलिड़ो ॥

फल मूल खणी आयो, राघव समीप लायो,  
 लादिलो लखणु राम चरणनि जो चेलिड़ो ।  
 गरीबि श्रीखण्डि अचो नूरिड़ा पाए के नचो,  
 जागायों साहिबु सचो नीह जो नवेलिड़ो ॥३॥

कोकिलि किलकार कई जै सियाराम चई,  
 लिव भरी लई जागो मिठी स्वामिनी ।  
 सा ई साइथ सदोरी जागे जनक किशोरी अमां,  
 वजां आउँ घोरी मुंहिजी मैया अभिरामिनी ।  
 भोजनु हथिड़े खणी निहारे रघुकुल धणी,  
 उठो सिय शील मणी, मत्त गज गामिनी ।  
 गरीबि श्रीखण्डि दासी चरण उपासी नितु,  
 जीओ सुखराशी, सदां सत्य सुखधामिनी ॥४॥

देरि दिसी दिलिबरु आतुरु थियो रघुवरु,  
 कौतक कमल कर धनुषु बाणु धारियो आ ।  
 धनुषु हथिड़े दिसी रिछिणि वियो साहु सुसी,  
 मतां वजे किको कुसी प्रीति मां पुकारियो आ ।  
 रिछिणीअ रड़ि कई जागी प्रिया मोद मई,  
 बचो देई मायड़ीअ तनु मनु ठारियो आ ।  
 मिलिया मिठा सियाराम खाईनि सुन्दर ताम,  
 गरीबि श्रीखण्डि गदु गीतिड़ो उचारियो आ ॥५॥



२८

हिक दीह हाकिम वटि हुई, वेठी संगति सारी ।  
 धर्म धुरंदड़ राम जी, गाई कीर्ति भारी ॥  
 जहिड़ो राघव पालियो धर्म आ, अहिड़ो केरु पाले ।  
 कुसमय में बि धर्म खे, इहो साहिबु सम्भाले ॥  
 धर्मराज पाले धर्म खे बि, पंहिजो पाणु खंयों ।  
 रघुवर धर्म जे बल सां, जड़ चेतनु साणु नियों ॥  
 धर्म धुरंदड़ श्री राम सम, पतिव्रता सम सीय ।  
 भयो न है नही होइंगो, कीर्ति अति कमनीय ॥  
 धर्म सेतु रक्षा लाइ, श्री रघुवर जो अवतारु ।  
 साकेत जो साहिबु बणियो, दशरथ राजकुमारु ॥  
 जंहि लखण निबाहियो नीहड़ो, सभु नाता तोड़े ।  
 महा कठोर आज्ञा खां, बि मुखिड़ो ना मोड़े ॥  
 उहो लादुलो लखणु भी, जीअ प्राणनि खां प्यारो ।  
 धर्म बंधन में बधिजी, कयो रघुवर न्यारो ॥  
 द्रई वचनु धर्मराइ खे, प्यारे रघुनन्दन ।  
 एकान्ति में कयूं गाल्हिड़ियूं, सन्तनि उन चन्दन ॥  
 आज्ञा कई लखण खे, थीउ दरिड़े ते दरिबानु ।  
 केरु बि अंदरि ना अचे, कयो रामचन्द्र फुरमानु ॥  
 असांजे वचन विलास में, जेको हिति ईदो ।  
 सो रहे दूरि दर्शन खां, जे वचनु न मर्जीदो ॥  
 लखणु बीठो दर ते, आयो ऋषी दुर्वासा ।

द्रिसी रुखु ऋषीअ जो, थिया कठनु ब्रई पासा ॥  
 ऋषीअ चयो रघुवर खे, सिघो वजी सुणाइ ।  
 दर ते दुर्वासा ऋषी, दिलिबर आयो आहि ॥  
 लखण चयो ऋषिराज खे, करे मिन्थ नीजारी ।  
 आज्ञा अन्दरि अचण जी, नाहे हिन वारी ॥  
 ब्र टे घड़ियूं खणी ब्राझ सां, हितिडे कयो विश्रामु ।  
 धर्मराइ सां एकान्त में, आहे वेठो राजारामु ॥  
 ऋषीअ चयो घणे रोष मां, न त भस्म कयां सभु राजु ।  
 सदां ब्रह्मण्य देवु आ, प्यारो श्री रघुराजु ॥  
 लखण वीचारियो दिलि में, हाणे कीअ कयां ।  
 राघव राजु काइमु रहे, आउ सदिके शाल थियां ॥  
 इहो वीचारु करे दिलि में, लछिमणु उति आयो ।  
 सारो हालु ऋषीअ जो, अची रघुवर बुधायो ॥  
 द्रिसी लखणलाल खे, तद्रहिं धर्मराज चयो ।  
 हाणे पाड़ि पंहिजे कौल खे, तो वचनु भंगु कयो ॥  
 बोल बुधी धर्मराइ जा, थिया व्याकुल ब्रई रघुवीर ।  
 चम्बुड़ी पिया ब्रई भायड़ा, थी अन्दर मंझि अधीर ॥  
 रघुवर चयो मुंहिजा भायड़ा, तूं अन्दरि छो आएँ ।  
 ऋषीअ जे सराप खां, छो कोमल कीब्राएँ ॥  
 केदो बि दुखु सिर जे अचे, केदो समयु सताए ।  
 पर गदु हुजूं ब्रई भायड़ा, को भउ भोलो नाहे ॥  
 विछोड़े जी वीर तो, छा खां वाट वती ।

अगेई विरह जे बाहि में, आ छाती ताव तती ॥  
 आउ लखण मुंहिजा लादुला, जानिब जीअ जियारा ।  
 सुमित्रा सुवन सिकी लधा, प्राणनि खां प्यारा ॥  
 हाणे धर्म ऐं सत्य जी, कान कंदुसि परिवाह ।  
 सभु छर्दीदुसि छिन में, तोसां थी हमराहु ॥  
 धर्म कर्म सभु राज सुख, तोतां वारणु कंदुसि वीर ।  
 वरी हली रहूं विपिन में, पहिरे वलिकल चीर ॥  
 हिन भयंकर भव सिंधु में, हिकु तूई आं साथी ।  
 कीअ परे करियां पाण खां, तोखे ब्राल संघाती ॥  
 तूं ई जीवन नौका जो, आहींमि सहारो ।  
 तूं ई हारु हिये जो, तूं नेणनि जो तारो ॥  
 माणिकियुनि खां बि मिठो लगीं, मुंहिजा दिलबर भाउ ।  
 लिकायांइ लख कोठियुनि में, ओ अदल ओरे आउ ॥  
 इहा कथा कंदे साई मिठा, वहाईनि नेणनि नीरु ।  
 लेटी पियुमि तूलिड़े ते, थी अबलचन्द्रु अधीरु ॥  
 दुखीअ दिलि सां दास सभु, रुअनि जारों ज़ार ।  
 मगनु थिया महबत में, रही न सुरिति संभार ॥  
 हा रघुवर हा ला.दुला, चई पलि पलि पुकारीनि ।  
 लेथिड़ियूं पाए धरतीअ ते, हंजूं पिया हारीनि ॥  
 साई अ सुजागु करण जी, अमड़ि सुरिति पई ।  
 गुलाब जलु मुखिड़े छटे, विजिणे वाउ कई ॥  
 सुद्रिका भरे साहिब मिठा, नीह निद्रा खां जागिया ।

वरी मधुर विरुंह लाइ, अबल अनुरागिया ॥  
 जुगल मधुर मेलाप जो, तदहिं साहिब दिठो समाजु ।  
 परिवार सां पुष्पक ते, बिराजित श्री रघुराजु ॥  
 रटनु करनि तीर्थनि जो, जुगल विमान चड़िही ।  
 अबल दिननि आसीसिड़ियूं, आई सोनी शुभ घड़ी ॥  
 जै जै जुगल धणियुनि जी, जानिब उचारी ।  
 जै जै सां गूंजण लगी, सत्संगति सारी ॥  
 भाउनि सहिति अवधपति, करे चोज़ कलोल ।  
 साई ढकण ढोलु, जसिड़ो गाए जानिब जो ॥

२६

जसु गाए जानिब जो, मीरपुरि महाराजु ।  
 नीह भरिये नेणनि में, सदां अवध समाजु ॥  
 बाहिरि हास्य विनोद में, कौतुक निधि करतार ।  
 पर अन्दरु जुड़ियो जानिब सां, गहिरे प्रीति प्यार ॥  
 नित्य सिद्धि निर्मल धणी, परा प्रेम प्रबीन ।  
 रहनि नित्य विहार में, जीअ जलिड़े में मीन ॥  
 तोड़े अचलु अनुरागिड़ो, तबि पलि पलि प्यासी ।  
 सभ खां घुरनि आसीसिड़ी, थियूं वृन्दावन वासी ॥  
 निर्मल श्री नन्दगांव जे, वजी वणनि में विचिरूं ।  
 बथुए जो खाऊं सागिड़ो, ऐं मितेरनि कचिरियूं ॥  
 जेके वासु करे ब्रज देश जो, साग पता खाईनि ।  
 तिनि भक्तनि जे भाग खे, सुर मुनि साराहीनि ॥

मुक्ति चयो गोपाल खे, मुंहिजी मुक्ति बुधाइ ।  
 गोपाल चयो ओ मुक्तिडी, वजी ब्रज में लेथिड़ियूं पाइ ॥  
 एकीह जोजन ब्रज भूमिड़ी, गौलोक खां आई ।  
 शरद निशा में सांवरे, जिते मुरली वज़ाई ॥  
 जुगल कृपा बिनु ब्रज जो, क्षण न मिले विश्रामु ।  
 से मिठा लगनि माधव खे, जिनि नीहुं कयो निष्कामु ॥  
 पल पल सम्भारीनि ब्रज खे, साहिब सिकड़ीअ सांगु ।  
 तोड़े जिते किथे जानिब सां, गदु आ गोविन्दु पाण ॥  
 सत्संग में साहिबु मिठो, ब्रज खे साराहे ।  
 उहे गीतड़ा गाए, मुहबत मंझि मगनु थी ॥

• गीतु •

वृन्दाबनु वृन्दाबनु वृन्दाबनु थी गायां ।  
 वृन्दाबनु जी रजड़ी लिडनि खे लगायां ॥  
 जिते मोहनु मिठिड़ो थो मुरली वज़ाए,  
 बुधी ड्रुकनि गोपियूं सभु कारिज भुलाए ।  
 उन्हीअ ब्रज बन जी मां दासी सदायां ॥१॥  
 जिते जमुना लहरियूं मगनु थियूं बणाईनि,  
 सखिणियुनि दिलियुनि खे थियूं सिक सां भराईनि ।  
 मां यमुना पुलिनि ते जुगल गीत गायां ॥२॥  
 पंजनी रसनि जो थो धामो विराहे,  
 मुक्तीअ जो सुखु जहिं जो कणि को बि नाहे ।  
 कहिं गुल जो यां वलि जो उते जनमु पायां ॥३॥

ब्रज जे सुखनि लाइ थी लक्ष्मी लीलाए,  
 हर हर गगन मां झातियूं थी पाए ।  
 तहिं वृन्दाविपिन जो मां चैरो चवार्यो ॥४॥  
 रिषि मुनि रहनि जिति पखी रूपु धारे,  
 बुधनि मिठी मुरली समाधियूं विसारे ।  
 गुंजाखं गुलनि ते मधुपु थी मचायां ॥५॥  
 जुगल जे लीलां सां अंकिति भूमि सारी,  
 वणनि ऐं वलियुनि खे सींचनि पिया प्यारी ।  
 गाए केल तिनि जा मां रूहड़ो रीझायां ॥६॥  
 सनेही संतनि जा जिति आश्रम रसीला,  
 हरीअ सां मिलण लाइ कनि हर दमु था हीला ।  
 मिले वासु ब्रज जो भलो भागु भांयां ॥७॥  
 गरीबि श्रीखण्डि गढ़िजी ब्रज में गुजारियूं,  
 प्रमोद विपिन जे युगल खे सम्भारियूं ।  
 साकेत जे साहिब जा मां मंगल मनायां ॥८॥

३०

कृपा निधान कश्मीर में, दिलि सां दौर कया ।  
 बावीह दीहैं विनोद में, लंघे झटि वया ॥  
 अजां बि कश्मीर रहण जो, सभिनि मन उत्साहु ।  
 किराये ते जाइ वठण लाइ, आयुमि शहर में शाहु ॥  
 घुमें घोडु धिटियुनि में, रहिबरु रस निधानु ।  
 सा भुमिड़ी भागनि भरी, जिति साई सन्तु सुजानु ॥

सठि रुपये भाड़े ते, हिक्कु मालिक वतो मकानु ।  
 सेवकनि खे चयो सुभूअ जा, खणी अचिजो सामानु ॥  
 घुमंदे घुमन्दे शहर में, सरितियूं थियड़ी संझि ।  
 सेघ मन्झां संगति सां, घोटु आयुमि घर मंझि ॥  
 भोजनु करे भाव सां, कई गीतनि जी गुलिज़ार ।  
 खीरड़ो पी खुशियुनि जो, शयनु कयो सरिकार ॥  
 दासनि घणु अनुराग सां, वेठे साईअ जोर दिना ।  
 तदहिं अचानकु साहिब चया, वचन रस भिना ॥  
 हितिड़े हाणे रहण जी, ठाकुर दिलि नाहे ।  
 सम्बति कयो सवेर जो, अचो मोटर खे काहे ॥  
 अमड़ि चयो साई कयुव, मकानु किराए ।  
 कुझु दीहैं रहूं रस सां, सभिनि शौंकु आहे ॥  
 हुक्मु दिनो हाकिम मिठे, करियो तुरतउँ तियारी ।  
 सभिनि चयो सनेह सां, बाबल ब्रलिहारी ॥  
 बिना जतन मोटरु मिलियो, थोरे भाड़े साणु ।  
 संगति सां उन ते चड़िहियो, साई सन्तु सुजाणु ॥  
 सुहिणी सणिक वणिकार सां, वाह जो आहि बणी ।  
 ज़ाताई मोटर सैरिड़ो, करे थो मुहिबु मणी ॥  
 मगनु भाव जे राज में, मिठो मीरपुरि धणी ।  
 प्रगटियो आ सन्त रूप में, साई सहस फणी ॥  
 वणिकार खां पोइ बर्फ जूं, सिणिधूं दिठाऊं ।  
 मोटरु हले तिनि मंझा, ठंडक झटियाऊं ॥

मजूर खोटे बर्फ खे, रस्तो पिया ठाहींनि ।  
 भरे लपा बर्फ जा, मंझि मोटर उछलाईनि ॥  
 पहाड़नि जा पारा दिसी, दिलिबरु दिलि पेठो ।  
 प्रवर्षण पहाड़ ते, दिठो रघुवरु खे वेठो ॥  
 व्याकुल विरिह व्यथा में, हुओ रघुकुल उज्यारो ।  
 तुम्बो भरण पाणीअ जो, वयो लक्ष्मणु प्यारो ॥  
 राति अंधेरी बादल घेरी, दरिया लहरी मारे ।  
 सदिड़ा करे सियचन्द्र खे, साहिब सम्भारे ॥  
 अडणु अथमि अंधेरिड़ो, मुखचन्दु उभारे ।  
 पर देही पखीयड़ा, मूखे वेहु न विसारे ॥  
 दिसी विकल रघुवीर खे, थियो अबलु चन्दु अधीरु ।  
 लोक लखा जिये नां पवे, थियड़ा गहीर गंभीरु ॥  
 घणो रोकियाऊं रस खे, जानिब जुहिदु करे ।  
 पर मोतियुनि जियां आंसुनि जी, नेणनि झर झरे ॥  
 साहिब खे सिक सांढण जी, आ दातर दिनी दाति ।  
 अन्दरि बट्ट विरिह जा, बाहिरि वाई न वाति ॥  
 मांदिकाई मालिक जी, साई अ थिये न सठी ।  
 जितां किथां जानिब कई, आशीष निधि कठी ॥  
 सफलु आशीष सज़ण जी, सतिगुर शेर कई ।  
 मिलिया जुगल जशन सां, विरह वेल वई ॥  
 आया गदिजी अडण में, थिया कुशल खेम कल्याण ।  
 सुजागु थिया समाज खां, साई संत सुजान ॥



मोटर में मालिक कई, मिठिड़ी विन्दुर विरूंह ।  
 रसिड़े में रीधो रहे, साईं सन्त सूंह ॥  
 सांझीअ जो राम बन में, दिलिबर कयो द्वेरो ।  
 जिते आयो आ रघु लादुलो, भरत सां हिकु भेरो ॥  
 सारी राति रसिड़े सां, उते थकिड़ो मिटायो ।  
 सवेर अगिते हलण जो, साहिब कयो सायो ॥  
 राजा जे आगमन लाइ, हो रस्तो सींगारियो ।  
 आजियां करिनि अदब सां, गीतिड़ा उचारियो ॥  
 उन सींगारियल सणिक तां, हलियो मालिकनि मोटरु ।  
 जिते किये जानिब लाइ, घोट सँदो आ घरु ॥  
 कैसरि जे खेतनि मां, मोटरु इऐं हले ।  
 जणु सुगन्धि भरी समीर थी, हलण खां त झले ॥  
 कैसरि जे सुगन्धि सां, मस्तक पुरि थिया ।  
 सभु सुगन्धि खणी सेवा जे, घरिड़े मंझि विया ॥  
 सभिनी गद् गद् कण्ठ सां, कई गीतनि गुंज्जार ।  
 कई जानिब जैकार, गाईंदा वजाईंदा हलिया ॥

३१

टाक मंझंदि टकरनि मां, जदहिं हलण लगी लारी ।  
 ससुईअ जे सूरनि जी, पेई यादि कथा सारी ॥  
 कींअ पुन्हल लाइ परिबतनि में, घुमें ससुई वेचारी ।  
 हिकिड़ी प्यास पुन्हल जी, बी उज बुख जी मारी ॥  
 टियों पंधु पहाड़नि जो, चोथों घोट विधसि घारी ।

पंजो पहणनि पेरु पिथूं कया, छहों छिनल आ साड़ी ॥  
 सतों सहेलियुनि खां सवाई, थी हीणी हेकारी ।  
 अठों आरीअज़ा मजी, चिन्ता चित्त भारी ॥  
 नाओं निहोड़ी नीह जी, पुन्हल जी प्यारी ।  
 उन्हीअ जे दिलि दरिद में, कई कोकिल किलकारी ॥

वाकुफु ना वणिकार जी, जिते पाणी खंयुमि न पाउ ।  
 लगनि लुकूं लतीफु चवे, माजूरियनि मथाउँ ॥  
 .दूंगर दिनमि .दुखिड़ा, सोज़ सुकायुमि साउ ।  
 उते ओदो आउ, जिते होत हेखिली आहियां ॥१॥

वाकुफु ना वणिकार जी, जिति बारी सुझनि बर ।  
 आउ वसीला सुपिरीं, मां थकियसि गोले थर ॥  
 लहिजि लालु लतीफु चवे, कांध मुईअ जी कर ।  
 उते अचीमि वर, जिते होत हेखिली आहियां ॥२॥

आउँ न गदिजसि पुन्हल खे, हीउ द्रीहुं पुणि वयो ।  
 केच धणीअ जे कन ते, को न परिलाउ पयो ॥  
 कंहि कुन्याउ कयो, लिखी लेखु बिरह जो ॥३॥

.दूंगर .दुखोयुनि खे, दिलासा त दिजनि ।  
 घणो पुछिजे तिनि खां, जेके वरनि खां विछुड़नि ॥  
 तूं कीअँ संदा तिनि, पहण पेर पिथूं करी ॥४॥

अहिङ्गी तरह अनुराग में, थियो मगनु मीरपुरि चन्दु ।  
 भागु सुहागु सत्संग जो, दासनि जो दिलिबन्दु ॥  
 हामी अथमि हीणनि जो, अधीननि आनन्दु ।  
 छोरनि पाल सजण जो, सदां बख्तु बुलन्दु ॥  
 पोइ साईअ गातो गीतड़ो, दास बि गदु गार्इनि ।  
 बुधी विरलाप विरिह जा, रुअनि बादाईनि ॥  
 सवें भरीनि सुदिकिड़ा, आंसूं वहाईनि ।  
 विछिड़ियूं मिलनि वरनि सां, इऐं ईश्वर लीलार्इनि ॥  
 विरिह नदीअ वहण लगा, सभेई सत्संगी ।  
 लारीअ जे मिस्तरीअ खे, बि चोट लगी चंगी ॥  
 उहो बि कंहि अनुराग में, वेठो आँसू वहाए ।  
 दिलि में चवे दर्दनि भरियो, वाह जो सन्तु आहे ॥  
 जणु पाण दर्दु दिलदार जो, रूपु धरे आयो ।  
 या पाण प्रभूअ प्रमीअ जो, आहे सांगिड़ो सजायो ॥  
 पोइ मिलण जा प्रसंग चई, कई हर्षनि जी हुबकार ।  
 माणे रस अपार, आया ज़मूंअ खां लाहोर में ॥

३२

लाहोर मां मेल गादीअ में, कई तकिड़ी तियारी ।  
 दासनि बि दिलि सां कई, हर दमु होश्वारी ॥  
 गादीअ गपा गीह जी, माणुहुनि भीड़ मत्ती ।  
 काथे बि ग.दु विहण जी, मिली न जाइ रती ॥

जुदा जुदा वेही रहिया, गाद्रीअ मंझि चड़िही ।  
 माणुहुनि जी घणी मूंझ में, काड़िहे मंझि कड़िही ॥  
 साहिब हिक सेवक सां, आया अपरक्लास ।  
 पर संगति बिना सज़ण खे, नाहे हर्षु हुलास ॥  
 राइविन्ड जी टेशनि ते, गाद्री जदहिं आई ।  
 लथा प्लेट फार्म ते, साहिब सुखदाई ॥  
 सभिनि लाहि गाद्रीअ मां, इऐं सेवक चयाऊं ।  
 बीअ गाद्रीअ में हलण जी, आज्ञा कयाऊं ॥  
 सामानु सभु लाहिण लगा, त भाई जनि लीलायो ।  
 हली विहो गाद्रीअ में, सामालु अथऊं ठाहियो ॥  
 सुजी टेशनि परदेस में, कीअँ रातिड़ी गुजारियूं ।  
 कृपा करियो साहिब सच्चा, सभु ग्राहि संवारियूं ॥  
 साहिबनि चयो हठीला, हटु न करि हाणे ।  
 राति रहूँ हिति रस सां, पोइ हलूं सुभाणे ॥  
 भाई जनि चयो दासनि ते, महिर कयो साई ।  
 परीक्षा में न पासि थियूं, असीं भुलल सदाई ॥  
 ऊची टिकेट वठी अचूं, उते विहोमि धणी ।  
 कृपा करे दासनि जी, मजो मिन्थ खणी ॥  
 जोश मंझां जानिब तदहिं, चपाट ओलारी ।  
 लाहि दुम्बा सामान खे, तो भुल कई भारी ॥  
 पोइ त सभु सामान खे, लाहिण मंझि लगा ।  
 हिक बिए खे सद्रण लाइ, गादनि द्राहुँ भगा ॥

उधे पिए अनुराग सां, यकितारो वजायो ।  
 वेठो हो रस रंग में, अचे वाधन जागायो ॥  
 पुछण लगो तद्रहिं प्रीति सां, छा सखरु आहे आयो ।  
 लहु सखर जा पुट सिधो, छो अथई उचायो ॥  
 पोइ त प्लेट फार्म ते, मिली कयो सत्संगु ।  
 भोजनु खाधो प्रेम सां, थियो घणो रस रंगु ॥  
 सवेर जो सभिनी खे मिली गादी खुलासी ।  
 चड़िही वेठो घणे चाह सां, अबलु अविनाशी ॥  
 सभेई चवनि साहिब मिठा, कयव केदी भलाई ।  
 आज्ञा में आनन्दु आ, पर मति न थे आई ॥  
 सभु करिणी साहिब जी, आहे कृपा सां भरिपूरि ।  
 इन्हीअ करे आज्ञा में, हलणु आहे ज़रूरि ॥  
 गादीअ में सत्संग कन्दा, साई सखर में आया ।  
 थियड़ा मन भाया, दासनि मीरपुरियुनि जा ॥

• गीत •

साई सुजसु तुहिंजो, आहे जीवनु मुहिंजो,  
 तुहिंजी कीरति पावनु कयो प्राणु आ ।  
 जहिंखे कयुव पहिंजो, सोई तरियो सहिंजो,  
 तहिंजी रसना ते तुहिंजो गुण गानु आ ॥  
 तुहिंजो सरलु सुभाउ सचारो,  
 छल छनद खां निर्मलु न्यारो ।

आहे अन्दरि बाहिरि उजियारो,  
 जहिं ते रीधो श्री रामु प्यारो।  
 तुहिंजो नीहुं निष्कामु, आहे मुहबत मुदामु,  
 तुहिंजी कोकिल जहिडी मिठी तान आ ॥१॥

तुहिंजी दिलिडी उदारु घणी आ,  
 तुहिंजो इष्टु श्री रघुकुल मणी आ।  
 तवहां कई जहिं ते कृपा कणी आ,  
 तहिंजी प्रभुअ सां बेशक बणी आ।  
 तवहां जी मिठिडी कथा, बुधी भविडा लथा  
 तवहां जो जाहिरु जसिडो जहान आ ॥२॥

तवहां जो सुजसु सुगन्धी समार आ,  
 जणु हरि रस जी मिठी हीर आ।  
 जहिंजी जागी सुठी तकदीर आ,  
 तंहिंखे महिमा मिली अक्सीर आ।  
 गाए नामु नचनि, रस रंगिडे रचनि,  
 तिनि ज़ातो तवहो खे भगुवानु आ ॥३॥

तवहां जी कीरति कलि मल हरिणी,  
 भव सागर तारण तरिणी।  
 दिलि भक्ति भण्डार सां भरिणी,  
 लाए लादिली लाल जे चरणी।

पाए प्रेमु पले, वठी हथिड़ो हले,  
जिते मुहिब मिठे जो मकानु आ ॥४॥

साईं साहिब सदां सुखराशी,  
जिनि जो आनन्दु अचलु अविनाशी ।  
आहे पावनु अङ्गु कोट काशी,  
करे राम नगर जो निवासी ।  
पियारे प्रेम पहल, दियनि टहल महल  
अहिड़ो दानी दिलिदार जो दानु आ ॥५॥

३३

श्री वाहगुरु चई सखर जो, हाणे चवां रसु सारो ।  
कीअँ सिंधूअ ते सैरु करे, साईं सोभारो ॥  
सवेर जो बन्दर ते, आहे अजबु निज़ारो ।  
सिन्धूअ जे लहिरियुनि जो, दिठो रंगिड़ो न्यारो ॥  
किये कथाऊँ कुरिब भरियूं, किये सुन्दरु शिवाला ।  
इश्नान करिनि उमंग सां, माणुहूँ मतिवाला ॥  
किये बाज़ीगर बाजियूं विझनि, किये भगतनि जूं पंगतियूं ।  
किये दरयाह में अखा विझनि, पैचनि जूं पंगितियूं ॥  
के चाड़िहीनि जलु पिपिल ते, के कनि सूरज तर्पणु ।  
के पटिका ब्रधनि प्यार सां, दिसी मुख दर्पणु ॥  
किये सेरब लाइ सदिड़ा करिनि, निउड़त सां नाई ।  
किये होका दियनि हुलास सां, घोर वारा भाई ॥  
किये थधा जल मटनि जा, प्याऊ पियारीनि ।

सोढा लेमनि वारा सिक सां, सदे विहारीनि ॥  
 साई बि नितु सवेर जो, कनि सिन्धूअ जो सैरु ।  
 गुलिड़ा विझी विनय कई, जिति किथि कजाइ खैरु ॥  
 ख्वाजा खिजिर अमर जिन्दा, तूं दाता दरयाहु ।  
 तूं ई वरुणु देवता, नौ सउ नदियुनि नाहु ॥  
 सिन्धू जल दरयाहु आ, साई सिक दरयाहु ।  
 सिन्धू नदियुनि नाहु आ, साई निमाणनि नाहु ॥  
 सिन्धूअ ठारे हीर थी, साई वचननि सां ठारे ।  
 पर सिन्धूअ में भउ बुद्रण जो, साई बुद्रल भी तारे ॥  
 रातियां दीह वहंदी रहे, सिन्धूअ जल जी सीर ।  
 तिये साई अ दिलि में, सिय रघुवीर उकीर ॥  
 सिन्धूअ मंझि अगाधु जलु, साई गुणनि गम्भीरु ।  
 साई सुकियूं दिलियूं सायूं करे, सिंधू सावा खेत सुधीरु ॥  
 साई साहिब सनेह जो, कथनु केरु करे ।  
 सदां दिलि ठरे, गाए जसु जानिब जो ॥

३४

हिक दींहु नदीअ तीर ते, पिए साईअ सैरु कयो ।  
 दौरु दिसी दरयाह जो, वाह वाह वीर चयो ॥  
 हिक सुगन्धि निमु बूर जी, बी लगे ठण्डिड़ी हीर ।  
 प्रफुल्लित थी प्रीतमु घुमें, जीअँ सरजूअ रघुवीरु ॥  
 दास चयो दिठो हिकु दृश्य उति, जोड़े हथ चयो ।  
 हीउ दिसो मुहाणे बालिको, कामिल कुरिबु कयो ॥



कोइलनि जी किटीअ मां, ज़णु विरधाता ठाहियो ।  
 सुन्दरु रचना तिलकु, आ बालकु बणायो ॥  
 तदहि मुश्कन्दे मालिक चयो, मूर्ख हेद्रे दिसु ।  
 कीअँ दन्द चमकनि हीरनि जियाँ, पंहिजा बि दर्पणु पसु ॥  
 सभ कहिं में कुझु श्रेष्ठता, विधिना आहि रची ।  
 सारी विश्व गुण दोष मय, इहा गाल्हि सची ॥  
 सन्त हन्स गुण खीर जो, करिनि सदाई पानु ।  
 वारि विकारु छद्रे दियनि, सति जो सदाँ ध्यानु ॥  
 मलीन मनुष्य मखियुनि जियां, गन्दी जाइ विहनि ।  
 भंवरनि वांगियां भगत जन, सदां सुगन्धि लहनि ॥  
 जीअँ गऊअ जे थण मां, वछुड़ा खीरु पीअनि ।  
 चिचिड़ चम्बुड़ी रतु कढ़ी, उलिटो दुखु दियनि ॥  
 इन करे गन्दी विरिति खे, न दिलि में जाइ दिजे ।  
 सभु सेजा साई वसे, उन्हीअ खे दिसिजे ॥  
 गेहन धारिजि दिलि में, इहो गुर मति ज्ञानु ।  
 इन जुगिति सां जतनु करे, कहु अन्दर मां अभिमानु ॥  
 रघुनन्दन हनूतन्त खे, इऐं कयो फुरमानु ।  
 सो अनन्यु जंहिजी इहा, मति न टरे हनूमान ॥  
 जो ज़ाणे जड़ चेतन खे, रूप राशि भगवन्तु ।  
 सेवकु थी सेवा करे, त रीझे कृपा कन्तु ॥  
 बोल बुधी बाबल जा, दासनि दिलि ठरी ।  
 गद् गद् थी घणे प्यार सां, जै जानिब उचरी ॥

जीउ रसीला सतिगुर साई, पियारीं प्रेम प्याला ।  
 वचन सुधा सां सभु कया, माणुहूँ मतिवाला ॥  
 मस्ती लाल लबनि जी, राह रब जी देखारे ।  
 साई शरणि पयनि खे, सिक सबक सेखारे ॥  
 से कबूल थिया करतार वटि, जिनि नीह सां निहारे ।  
 जंहि कोठायो बाबल जो, तंहि जमु लेखो वारे ॥  
 विछुड़िया जन्म अनेक जा, वर सां विहारे ।  
 जे गृहस्थ में गलितानु थिया, से पत्थर भी तारे ॥  
 ओ हाकिम हर्षनि भरिया, जुवाणी नितु माणीं ।  
 घुमीं प्रमोद विपिन में, मिठी कोकिलि महाराणी ॥  
 गरीबि श्रीखण्डि गुण भरी, करीं कुरिब कहाणी ।  
 श्री मैथिलि मन भाणीं, सिकिड़ी नितु सहचरियुनि जी ॥

३५

रोहिड़ीअ में रांझन जे, आ वदिड़नि जी दरबार ।  
 श्री टेकचन्द ऐं सहजराम, गंगाराम गुलजार ॥  
 महन्त हुआ दरबार जा, वदीअ सघ वारा ।  
 शुद्ध सूफीअ मत में, थिया सरसु सोभारा ॥  
 श्री गंगाराम साई अ खे, पुटिड़नि जियां पालियो ।  
 होन हारु हीरो पसी, साह सां संभालियो ॥  
 अचनि मीरपुरि धाम में, घणो रखी अनुरागु ।  
 दिसी दिसी गद् गद् थियनि, साई साहिब सौभागु ॥  
 उन्हीअ समय दरबार जो, महन्तु हो प्रभु दासु ।

श्री गंगाराम चरणनि में, जिनि घणो कयो हो वासु ॥  
 ओचितो आनन्द कन्द में, ईदो दिठाई ॥  
 उमंग मां उथी करे, डुकिड़ी पाताई ।  
 निमंदड़ निर्मल धणियुनि खे, भाकुर भरियाई ।  
 लज़ीले लालन जा, हथिड़ा चुमियाई ॥  
 गढु विहारियाई गदीअ ते, सिकिड़ीअ सां सोरे ।  
 भाग भला मुंहिजा थिया, आए अडण मूं ओरे ॥  
 पंहिजो घरु ज़ाणीं मिठा, सिघो सार लहो ।  
 ब्रटे महीना बाझ करे, रोहिड़ीअ मंझि रहो ॥  
 दर्शनु करे तुंहिजो दिलिबर, वदिड़ा यादि पवनि ।  
 यादि गुरुनि जी जीवणु जग में, चारई वेद चवनि ॥  
 कहिड़ो वदनि जो शानु हो, कहिड़ी मिठी रूह रिहाणि ।  
 मस्तु रहनि पंहिजे मौज में, कढनि न कहिंजी काणि ॥  
 साईं अ चयो सचु था चओ, वदिड़नि जसु अटलु ।  
 तिनि जे कृपा प्रसाद जो, आहे असां खे बलु ॥  
 इऐं गद् गद् थी गदिजी कई, गुणनि जी गुफ्तार ।  
 पापड़ खाई पियनि पिया, थाधलि ठण्डे ठार ॥  
 पोइ कथा जी महल थी, आई संगति दरबारि ।  
 महन्त खे वन्दनु करिनि, वेझा थी नर नारि ॥  
 उन्हनि बुधार्नि हर्ष सां, साईं साहिब जसु ।  
 हीउ मीरपुरि मालिक, मिठो वदो वाणीअ रसु ॥  
 सभु सिक सां दर्शनु करे, दियनि अखियुनि आरामु ।

धनु साई धुन साहिबी, धनु धनु मीरपुरि गांमु ॥  
 धन्यु धनु भाग असांजिड़ा, थियो दिलिबर जो दर्शनु ।  
 कदहिं मनु प्रसन्नु, अहिड़ो अगे ना थियो ॥

३६

कथा बुधो कलितार जी, दिलि सां ध्यानु धरे ।  
 जणु साक्षात् शुकदेव थो, रस जो कथनु करे ॥  
 प्रभु दासु पाराशर जियां, बुधे चितु लाए ।  
 वाह वाह चई विच में, साई अ साराहे ॥  
 गुरु ग्रन्थ साहिब गीत जी, थी कथा रस वारी ।  
 सभु साधननि सिरताजु आ, सत्संगति सोभारी ॥  
 माधव सत्संगति करे, सु तरिया ।  
 गुर प्रसाद परम पद पाया, सूके काष्ट हरिया ॥  
 अर्थु कयो इन्हीअ जो, मीरपुरि जे मीर ।  
 जणु अँमृत झरिणो झरे, वहे रस जी सीर ॥  
 सत्संगति सुख पलक जे, मुक्ति न मदु भायां ।  
 लोक परलोक जा सुखिड़ा, सभु घोरे घुमायां ॥  
 स्वर्ग अपवर्ग आनन्द खे, तोरे त्रिष्टियुनि दिठो ।  
 काणि में बि तुरिया कीन की, आ सत्संग स्वाद मिठो ॥  
 जिनि जिनि लधो श्रीरामु रसु, सो ई सन्त प्रसादु ।  
 नीचनि माँ सभु ऊँच थिया, दिसी वठे विसमादु ॥  
 वाल्मीकु रिषि असुलु हो, रत्नाकरु डाकू ।  
 फुर मार करे रस्तनि ते, खणी छुरी चाकू ॥

अचानक उन खे मिल्यो, सन्त दरस सौभाग्य ।  
 लिंवड़ीअ सां लगी वियो, मरा नाम अनुराग्य ॥  
 सन्तनि जे आदेश सां, उलिटो जापु कयो ।  
 त बि पसन्दि पियो प्रभूअ वटि, सवलो दाउ पयो ॥  
 वाल्मीक भयो ब्रह्म समाना, इऐं तुलसी दास चयो ।  
 सत्संगति प्रताप सां, जग जो पूज्यु थियो ॥  
 नारदु सदिजे देवर्षि, हुओ दासीअ जो बरारु ।  
 सन्तनि जे प्रसाद सां, तंहि खे मनिड़ो चवे मुरारि ॥  
 श्रुति चवे सत्संगु आ, लालन लीलां घरु ।  
 बिना देरि हिक दम में, देखारे दिलिबरु ॥  
 पर प्राप्त थिए उन्हनि खे, जिनि वाली कंदुमि वड्डु ।  
 श्री राम राज्य मार्ग में, सत्संगु आहि समरु ॥  
 हिकु बालकु हुओ शुभ लछिणो, जंहिजो मांधवु नामु ।  
 कृपा पात्रु सन्तनि जो, अनुरागी अभिरामु ॥  
 सभेई नाता घर जा, छदियाई टोड़े ।  
 सेवा करे सन्तनि जी, नीहु नातो जोड़े ॥  
 रोजु अचे सत्संग में, कथा बुधण काणि ।  
 सारी राति सन्तनि सां, करे रूह रिहाणि ॥  
 प्रभाति जो अचे घर में, थी महबत मस्तानो ।  
 वाह सतिगुर बलिहारु मां, कयुइ दिलिबर देवानो ॥  
 वाह अमृत तुंहिजा बोलिड़ा, खारायुइ प्रेम पुलाहु ।  
 घुमंदो दिसां घिटियुनि में, आनन्द सिन्धु अथाहु ॥

जै सतिगुर साहिब सच्चा, चई बाज़रि मंझि नचे ।  
 पहिरेदारु पुलीस जो, पियो ओदी महल अचे ॥  
 उन न ज़ातो अनुराग खे, ज़ाताई को चोरु ।  
 मूखे दिंसी मुंहजे भव खां, करे चरियनि जियां शोरु ॥  
 ओचितो उन बालक खे, अची सोघो झलियाई ॥  
 हलु सतिगुर जा पुट चई, गारियूं दिनाई ॥  
 बेगाह वक्ति घिटियुनि में, छा लाइ चोर घुमी ।  
 बहाना करे भज़ण जा, नचीं ऐं झुमी ॥  
 दे को ज़ामिनु पहिंजड़ो, न त विझाई थो जेल ।  
 अकेलो आहीं फुर लुट ते, या बियो बि अथई को बेल ॥  
 मांधव चयो सत्संग मां, हींअर आहिंयां आयो ।  
 वजां थो घर पहिंजड़े, तो वाट ते वरायो ॥  
 वठी आयुसि पीउ वटि, अची सदिड़ो कयाई ।  
 बाबा छड़ाईमि पुलीस खां, रोई चयाई ॥  
 पिता त संदसि हलति खां, अगई तंगि हुओ ।  
 चयो तूं न असां जो पुटु आं, असां सहायो मुओ ॥  
 वियो सजे परिवार वटि, कंहि बि न साथु दिनो ।  
 जिनि नातो जोड़ियो नाम सां, तिनि नातो जग छिनो ॥  
 मांधव चयो सन्तनि खां, हली पुछो हिक वार ।  
 जे उन्हनि बि पंहिजो ना चयो, त जेल लाइ आउं तियारु ॥  
 आया सन्तनि दर ते, अची सांकरि खड़िकाई ।  
 अंदिरां मधुरे नाम जी, धुनिड़ी पिए आई ॥

सिपाहीअ खे सन्तनि चयो, हीउ असां जो ब्रारु ।  
 असीं ज़ामिन वार वार जा, करि न तूं तकिरारु ॥  
 सारी राति संतनि वटि, मांधव कयो आरामु ।  
 सुबुह जो आयो कोर्ट में, करे सन्तनि प्रणामु ॥  
 जज चयो जंहि खे पीउ बि, पंहिजो कीन चयो ।  
 अहिडे हीद्री ब्रालक खे, सूरी सेघु दियो ॥  
 पर वारु ना विंगो तिनि जो, जिनि हामी सन्तनि भरींनि ।  
 सूरी बि तिनि लाइ सेज थिए, जे के राघवु नामु ररींनि ॥  
 ब्रालक खे सूरीअ ते, जदहिं जलाद विहारियो ।  
 तदहिं अजगैबी असिरारु उति, भगुवन्त देखारियो ॥  
 सुको काठु साओ थियो, झुकी पृथ्वीअ द्राहुं ।  
 वारु न विंगो भक्त जो, जो जपे नीह सां नांउ ॥  
 टे दफा सन्त प्रसाद सां, सूरी थी साई ।  
 सभिनी चयो सत्संग जी, आहे वदी वदियाई ॥  
 गद् गद् थी गुरदेव वटि, ब्रालकु पोइ आयो ।  
 चम्बुड़ी पयो चरणनि में, नितु नीहड़ो वधायो ॥  
 भजिबे को दोऊ सुघड़, कै हरि कै हरि दास ।  
 सारु बि उहो संसार में, बी सभु फिकरनि फास ॥  
 इन्हीअ रीति सत्संग जी, वीर कई वाखाणि ।  
 सारी संगति गद् गद् थी, बुधी रूह रिहाणि ॥  
 ब्रिया बि अनन्त रसिड़ा, मिठे बाबल कया बयानु ।  
 सदां अमृत दानु, साई अ दिनो सत्संग में ॥

३७

हाणे हलूं था ठुल्ल दे, जिते दयाल दासु बाओ ।  
 साहिब जे सत्संग रही, जंहि खेतु कयो साओ ॥  
 अजबु श्रद्धा उन जी, पाण साहिब साराहीनि ।  
 शील वन्तु उदार चितु, गुणनि भरिया आहीनि ॥  
 अन्दरि सचो बाहिरि सचो, सच सां लातो नीहूं ।  
 साई साहिब जो सदां, माणियो महिरुनि मीहूं ॥  
 सरलु सूधो खिलमुखु घणो, कथा रसिकु हरि दासु ।  
 साईअ जा सेवक दिसी, हिंयडे करे हुलासु ॥  
 आदुर करे अनुराग सां, जीअ दिऐ जायूं ।  
 इऐं ज़ाणे दिलि में, कयूं भगवन्त भलायूं ॥  
 मजिलस करे महबत सां, ज़णु आयसि सज़ण सेण ।  
 बच्चा दिसी बाबल जा, ठरी पवनिसि नेण ॥  
 भक्तमाल जे कथा जो, वक्ता रसीलो ।  
 छदे हुजत ऐं हीलो, साहिब सां सन्मुखु रहे ॥